

मन्त्र

वैद्यविजोद (माषा)

संज्ञ मन्त्रिमाषी कृतः

Acc. No. 51124

Acc. No. 51124



दोः सुविधितुकी मोचरस अज मोदास मभा ५ पीसिवाले पी जाये अती सारन सिजाइ ३१ इति लघुग  
गाधरचूर्ण दोहा आब बी म अरु जाइ फल व डरु ह आ फू घालि जल में ले पौना निपर अती सार को  
ताल ३८ श्लोक सौ वीर पिष्टः सहकार कंठो नाभिः प्रलेपादति सार हंता इति अती सार को लेप दोः  
मो घाविल्व असु मोचरस लोद द्रव्य वधाव गुड सौ गोली बाधिये अती सार सब जाव इति गुटिका  
इति अती सार चिकित्सा समाप्त अथ ग्रहणी चिकित्सा दोहा चित्रका हे गु अज मोद पव कणामू  
लक्ष्मर लवल पंच त्रिकुटा सकल चूर्ण एह समधार ४० गुटिका दाडि मरु सहित पुनि बिजौर रस  
लेइ ग्रहणी पावन भूष मंद इ है जानि कै देइ ४१ इति चित्रक गुटिका दोः नागर मोय पती सस सुकु  
डा काल असु वेल पावा क हू असु धात की यह समाना करि भेलि ४२ तद्रुल जल असु मधु सहित ग्रह  
णी रक्त की दोइ अर्श मूल गुद प्रवाहिका हरै के रज जोइ ४३ इति नागर चूर्ण दोः जाती फल चित्रक  
हरउ दन् सुति विउंग ताली सदल उपरु चिकित्सा पालि मरि चल वग ४४ लोचन वंश द्रव्य धर



२७ ये दो० कहेइ नमादि अतीसार के रोग स<sup>प्र</sup> ज्वराति सार को दोनु जोग कहे वेद्य यद<sup>द</sup> को<sup>प</sup>  
२८ इति कलिगादि काय दो० <sup>जाल्या</sup> वालो विल्व <sup>ग</sup> अति स<sup>प्र</sup> चरिता मे गुड सम देहि आम शूल विबन्ध के रक्ताति  
सार को लेहि २९ पुनः दो० लोद <sup>मुनजी</sup> मुरे हठी मो चर स आब गूठली पाइ माजू फल दाडि <sup>अनारफल</sup> मंजुली मरिच म-  
स्तकी धाइ ३० वंश <sup>वेसलो वन</sup> नयन गुजरात को माई की कोर मूल कुडा बाल अरु जाइ फल ली जै ए सम तूल ३१  
तामहि कथ दोइ अंश धरि अरु पेठे के बीज ता का गिरि त्रय भाग ले चूरण सुक शुकीज ३२ कर दुगोटिका  
पोस्त जल टंक एक परवान तंडुल <sup>ज</sup> सो पी जीये सार है रान ३३ अथ वा देइ उटन <sup>ज</sup> गंगा को पर  
वाह तै से वेग अति सार को ता को रो कै राह ३४ इति लीलावती वटी दो० तंडुल पल इक अंश <sup>ज</sup> अठगुंभ  
जल महि मेइ घडी दोइ राघो पबैत बपी वन के देइ ३५ इति तावल पनी मर्यादा अथ गंगा धर चूर्ण दोहा  
अरु सो <sup>ग</sup> पाशुवा विल्व लोदल जालु पतीस आब बीज अरु मो चर स कुडा बाल सम पीस ३६ लोचन  
वाला इइय वपी सिंघाणि मधु पाइ तंडुल जल भोजन <sup>ज</sup> अती सार सब जाइ ३६ इति दृष्ट गंगा धर चूर्ण







इति तत्र दुर्वाः ॥ ओया ओय धीः पूर्वो जाता देवः ॥ अग्निपुंगुपुरामनेनुजभूषणसुहृं शतं धा माति  
 संच ॥ इत्योय धीः ॥ ओ हिरण्यगर्भः समवर्तता ये भूतस्य जातः ॥ परिरैकासीत सदा धार पृथिवी  
 यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेमः ॥ इति तत्र दुर्वा ॥ ओ अश्वत्थे वो नित्यं पार्तो वो जसति  
 कृता गोभाज इत्कि ला सययत्स न च य वृक्षस्य ॥ इत्यश्वत्थपत्रम् ॥ ओ अणाय स्वाहा ॥ आपाना  
 य स्वाहा ॥ व्यानाय स्वाहा ॥ ओ नेत्रे विर्केऽवालि केनेऽन पतिक प्रयत्न सस्य श्वेकः सुभद्रिका को  
 पीत्तवासिनी ॥ इति तत्रा म्रपत्तनम् ॥ ओ धान्यं मे सिंधिनुदिदेवा न्प्राणायत्नो दानाय ॥ आना  
 यत्वा दीर्घा मनुश्रसिति मायये धां देवो जः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभणत्वा हि देवा पा  
 ना चतुयो ॥ त्वामही तं पयोसि ॥ इति ध्यानं ॥ कलशोपरि स्थापनम् ॥ पात्रोत्तरे ॥ ओ अग्निर्ज्यो  
 तिर्ज्योतिराग्निः स्वाहा ॥ सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ॥ अग्निर्ज्योतिर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः ज्यो



ना० ४८

अथ अजिप्रतिमास्थापनादिकम् ॥ रौप्यमयी अक्षताः प्रथमा ॥ सुवर्णमयी विष्णोर्द्वितीया ॥ ताम्रमयी रुद्रः तृतीया ॥ लोहमयी यमस्य चतुर्थी ॥ ५ ॥ सीसमयी अंतस्पर्शे चमीतिः ततस्ताः प्रतिमाः मनोज्ञातिरिति संज्ञेण प्रतिष्ठाप्य पृथक् पृथक् कृपा ज्ञेयुनिधाय ॥ पुरुषसूक्ते न पूजयेत् ॥ तत्रेण वा ॥ पुरुषसूक्ते च ॥ ओं सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ स भूमिं सर्वतस्तथाऽत्यतिहृद्दं गुह्यं ॥ मित्वा बहूनाम् ॥ पुरुष एवेदं सर्वं यद्वृत्तं यच्च भाव्यं उत्तामृतं तन्न स्पृशेन्नो यदनेनातिरोहति ॥ २ ॥ आसने एतावानस्य महिमा नो ज्ञायां प्रपुरुषपादोऽस्य विष्वाभूता निजिपादस्यामृतं दिवि ॥ ३ ॥ पादौ ॥ जिपादुर्ध्वः उदैत्पुरुषः पादोऽस्य ह भवत्पुनः ॥ ततो जिष्ण्व्यक्रामत्साशना नशने अभिः ॥ ४ ॥ इत्यर्थम् ॥ ततो विराडजायत चिराजोऽधिपुरुषः स जातो अत्यरिच्यत पृथग्द्रुमिमथो पुरः ॥ इत्याचमने ॥ ५ ॥ तस्माद्यज्ञात्त



देमप्यमानेमहोदधौ उत्पन्नोसितदाकुं ॥ उत्पन्नोविष्णुनामयः ॥ ततोयेसर्वतीर्थोत्तिदेवः  
सर्वेत्त्वयिस्थिताः ॥ त्वयितिहेतिभूतादीन्त्वयिप्राणंप्रतिहेति ॥ शिवःस्वयंत्वयंत्वमेवा  
सिचिष्णुस्त्वंचप्रजापतिः ॥ आदित्यावसमोरुद्राःविश्वेदेवामरुद्राः ॥ त्वयितिहेतिस  
र्वेपियत्तकामफलप्रदः ॥ त्वत्प्रसादादिमयंज्ञंकर्तुमेहजलोद्भव ॥ सात्विध्यंकुरुमेदेव  
प्रसन्नोभवसर्वदा ॥ इतिकलशस्याप्युपयेत् ॥ ततःसंकल्पंकृत्वा ॥ कलशस्यापत्येवान्याद्याः  
भिःपूजयेत् ॥ इतिकलशस्यापत्तविधिः ॥ ततो गोदानार्थेविप्रवचराणादिकंकृत्वा ॥ तत्स  
दद्यात्सुकगोजस्यामुपयेत्स्यदेहोद्धारणार्थमुत्तिकामः ॥ इमांशंसर्वत्मांरुद्रदेवत्वांस्त्राणं  
जीरौप्पखुरीतामपरांकोस्पदोहिनींघंटाभरणचामरादिभूषितामसुकगोजायामुक  
शस्त्राणि ॥ अस्यायत्तुभ्यमहंसेप्रदये ॥ इतिसंकल्पंगोदद्यात् ॥ ततःसुवर्णप्रतिष्ठादद्यात्



पुरुषेण रुचिष्ठादेवाय नमस्तनुत ॥ वसंतोऽस्यासीदं ज्योतीषः इधमः शरद्वि ॥ १४ ॥ नमस्का  
 रः ॥ सप्तास्यासत्परिधरास्त्रिः सप्तसमिधः कृताः देवाय घञ्जतन्वाना अजधन्त पुरुषेण पुंसं  
 प्रदक्षिणा ॥ यज्ञेन यमः ॥ जन्त देवास्तानि धर्माणिः अथ मान्यासन्ते हताकं महिमातः स जेत  
 यज्ञं पूर्वेमाह्वयः संति देवाः ॥ १५ ॥ उद्दासतम ॥ तदुक्तं सौवर्णकारये हि सुं ब्रह्माणोरौष्यकं ॥ तथार  
 द्रेताममयं कुर्यात् ॥ यमलोहमथ तथा ग्रेतः सीसमयं कृत्वा प्रतिमां स्थापयेत्तयेति ॥ पुनः  
 संकल्पः ॥ ओं अष्टेत्यादिदेशकालादिकं स्मृत्वा मुकगोत्रस्यामुकग्रेतस्य दुर्मिराजत्ययो  
 यनाशार्थमौर्ध्वदैहिके संप्रदानं त्रयोपतामिद्व्यर्च्य कर्त्तव्यं नारायणवत्स्येण भूतब्रह्म  
 विष्णुरुद्रयमग्रेतप्रतिमाः ॥ स्वस्वमेजैर्यथा लब्धोपचारैरहमर्चयेत् ॥ इति संकल्पयेत्  
 ततो अस्मि प्रतिमां रौप्यममयी ॥ ओं युक्तेन राजसौम्ये देवस्य सवितुः ॥ सर्वे सगर्वा यशस्तपाः



स्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभते पयया ज्येष्ठे ॥ १ ॥ अजमेवाय ज्यानारण्या आम्नाश्रये ॥ इति स्तु-  
तेम् तस्माद्यज्ञात्तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः अजः समानियन्तिरे ॥ २ ॥ दाधे सियन्तिरे तस्माद्यजु-  
स्तस्माद्यजायतः ॥ ३ ॥ इति वस्त्रं ॥ तस्मादपवा अजायेत ये केचो भयादतः गावो हयश्चिरे तस्मा-  
तस्माज्जाता अजावयः ॥ इति यज्ञोपवीतं ॥ ते यज्ञे च हि धियो दान्युरु यज्ञात्तमनः ते न देवा-  
अयजेत सां धर्मा अयय प्रमये ॥ ४ ॥ इति गंधम् ॥ यत्पुरुषं वपदधुः कतिधा व्यकल्पयन्मुखं कि-  
मस्यासीत्किंचाहु किमरूपादा उच्यते ॥ ५ ॥ पुष्पम् आसणो स्पमुखमासीद्वा दूराजस्यः कृत उ-  
रुतदस्य यद्दृश्यः पद्भ्यां पद्भ्यां अजायत ॥ ६ ॥ इति धूपम् ॥ चंद्रमामनसो जातश्चक्षुः सूर्यो-  
अजायत ॥ ७ ॥ आजायुश्च प्राणश्च मुखो दग्निरजायत ॥ ८ ॥ दीपम् ॥ नाभ्या आसीदंतरित्त-  
थे श्री ह्योः समवर्तत पद्भ्यां भूमिर्दिशः ॥ ९ ॥ आजातया लोको अकल्पयतः ॥ १० ॥ तैवेद्यम् यत











३८  
स्तव्यावर्गो न ह रिता जिह्वा लालो प्रमुचति ॥ ४४ ॥ पित्तकोपेत्तुरक्ताभा तित्तादुग्धेव जायते ॥ जि  
ह्वा हाहान्विता जिह्वा स्फुलागुर्वी विलापिनी ॥ ४५ ॥ सुस्पृलकंठकोपेताक्षारा बहुकफा  
वहा ॥ दोषद्वये द्विदोषोक्तलक्षणा रसना भवेत् ॥ ४६ ॥ सर्वजिह्वा त्रिदोषे स्याद्विज्ञाताने  
कलक्षणा ॥ ४७ ॥ इति जिह्वा परीक्षा समाप्तम् ॥

छूटी लज्जा देह की ताको जानहु नाश ॥ १० ॥ ग्रीवा हृदय ललाट मुख से दशी तत न होई ॥  
जानै न आप शरीर को मृत्यु होई न र सोई ॥ ११ ॥ आभा गोमय वर्ण की शीश लप तत न जा स ॥  
अथ वाचिक धर्म शिर मरण माय मै ता स ॥ १२ ॥ हरित वर्ण जा की शिर रोम कूप मिलि जा  
ई ॥ अम्ला भिलाषी पुरुष सो मरण पित्त सैं स्याई ॥ १३ ॥ विनान मित्त गुरु तार है अथवा लघु  
ता देह ॥ रक्त अथै मुख नासिका कहि असांध्य है एह ॥ १४ ॥ कृष्ण जीभ अरु लिप्त मुख वाम



अक्षवैहीन॥ वात कहै अक्षरतुटै सोयमसेतीलीन॥ १५॥ तन की सुधि जाके नही शीतल स  
 कल शरीर॥ हृदय तप्त मुख स्वास अती सोयमराजा तीर॥ १६॥ रोम शिथिल अरु लाल चक्षु  
 हृदय प्रल अति होई॥ अधिक स्वास मुख ते चले सो नर जीवै कोई॥ १७॥ तृषा श्वास हि ध्यान  
 युगत काठ सरूपी देह॥ फिरे नेत्र अरु श्वास मुख सो जावै यम गेह॥ १८॥ प्रभा घटै सब दे  
 ह की सकति वचन की नाहि॥ अंतर जाके चर रहै सोयम के घर माहि॥ १९॥ सूरज ऊगे  
 वेदना जाके तन पर खेद॥ कंठै घुघुर कफ करै ता की नाहि उमेद॥ २०॥ कर्ण वधिर से  
 धान प्रलय लाल पसीना जास॥ उठतैं ही गारि जाइत नयम पुरता कौ वास॥ २१॥ इति असा  
 ध्य लक्षण काल ज्ञान समाप्ते॥ अथ नक्षत्र निर्णय अरिष्ट कथने॥ ज्योतिष चक्र विवा  
 र करि आदि निष्ठा देई॥ कही तयो ददश रात्रि की मरै कि जीवै कोई॥ २२॥ वारह दिन॥



अरु रात्रि षट्शतभिषा ह प्रमान ॥ तैसैं पूर्व भाद्रपद भरणी शीघ्र वै जान ॥ २३ ॥ उत्तर च वद  
ह दिन कहत रेवती कह दिन चार ॥ अथ कहिये आठ दिन मरन कहै निरधार ॥ २४ ॥ अ  
श्वनी दिन षट् जानिये भरणी पंच वषान ॥ सात दिवस कृत्तिका कही बीस एक परमान  
२५ ॥ तीन पक्ष सें शाय रहै जानै गुनि जन भेद ॥ कै जीवै कै मोक्ष होई ताकी नाहि उमैद ॥ २६ ॥  
रोहणी एकादश दिवस और आठ परमान ॥ नव दिन मृगशिरा जानिये पुनि षट् रात्रि  
वषान ॥ २७ ॥ दिवस पंच आद्रा कह्यो तामै मृत्यु जु होई ॥ अथ वा सें शाय जानिये पक्ष तीन  
मैं जोई ॥ २८ ॥ पुनर्वसु जाको ज्वर बढै बीस सात परमान ॥ ते रह दिन में छोडिये अथ  
वामरै निदान ॥ २९ ॥ सप्त रात्रि ज्वर पुष्प में ॥ अरु वर्ति जो होई ॥ मृत्यु प्रेत्यो मैं कह्यो परी  
न जीवै कोई ॥ ३० ॥ मघा द्वादश जानिये छूटि जाई दिन माहि ॥ पाते ऊपरि दिन बढै तो जीव



नकोंचाहि॥३१॥दिनदशपूर्वाफाल्गुनीउत्तरनवकेअष्ट॥अथवाविंशतिएकदिनऊपरि  
 होईनकष्ट॥३२॥हस्तअष्टादिनसप्तभनिदिवसआठकहुचित्र॥दिनदशछूटैस्वातिमें  
 अष्टातीनपुनिसित्र॥३३॥दिनईकईसवैशाखधरिदिवसआठअनुराध॥घोरज्वरजा  
 कोरहेताहिचिकित्साबाध॥३४॥ज्येष्ठापंचममृत्युभनिअरुदिनवारहजोई॥भूलराविद  
 शजानियेवीसाएकसुखहोई॥३५॥नवदिनपूर्वाषाढकेऔरउत्तराषाढ॥मासआठपुनि  
 मासनवकह्योगुनीजनपाठ॥३६॥अवणकहेहेआठदिनकहीमर्यादसवाएह॥छूटैम  
 रैइनवीचमेंसमझिऔषधीएह॥३७॥यहविचारकरिअुद्धमतिनीजोजसजगमाही॥  
 धर्मअर्थदोउसधेकीयेपापसवजोहि॥३८॥इतिनक्षत्रनिर्णयः॥अथमूत्रपरीक्षा॥अरु  
 शानीलरुखेअनिलउष्मपीतपित्तहोई॥स्निग्धशीतघनमूत्रसितश्लेष्मकह्योवैसोई



२८  
मिश्र मिले तो हंडकहु कहौ कृष्णसन्निपात॥ बुद्धि वेंत सो जानि ले देखि वर्ण अरु धात॥ ४०  
धारा पहिली छाडि दे कोश पात्र महि धार॥ तन कधूपरा ये पछे तैल वूद की डार॥ ४१॥ विंदु  
न पसरै मूत्र में वह असाध्य है जोई॥ तैल विंदु बुडै जहो कहै मरण सब कोई॥ ४२॥ जाहि अ  
जीरण रस सरस वेध होई मल जाय॥ ताहो वूद पसरै नही सो नरक कष्ट प्रकार॥ ४३॥ अथ  
विंदु लछन दोहा॥ चामर छत्र पताक घर हंस जु हस्ति सरोज॥ हय वृष के आकार शुभ  
दीर्घ दृष्टि करि खोज॥ ४४॥ अथ निषिद्ध दोहा॥ कछ पहल प्रंगाल खर का कउष्ट अरु साप  
गृह गोधा आकार जह इन तै भाजो आप॥ ४५॥ मूत्र अजा भा जानिये कुं कुम सम कहै जाई॥ ता  
को कहिये पित्त वह औषध करि मन लाय॥ ४६॥ प्रभा कूप जल तुल्य भनि कहौ ताही सम  
धात॥ दोष विचारै वैद्य तव पीछे औषध बात॥ ४७॥ इति मूत्र परीक्षा॥ अथ दूत लछन क



वै०  
६

यने दोहा ॥ अपनी जातिके दूत शुभ और जाति शुभ नाहि ॥ सुंदर मूरति कल वचन शुभ  
 लछन तन माहि ॥ ४७ ॥ दीन वचन भनि वैद्य को चले वेगति होई ॥ मलिन वस्त्र जाके तन  
 हि शुभ कहै सब कोई ॥ ४८ ॥ नगन शीश अरु व्याधत न रक्त वस्त्र जटाधार ॥ दूत बलावन  
 वैद्य को कदे न जावै लार ॥ ४९ ॥ छूटे केश ईधन मगन कुज्वर जक कवाय ॥ भूषा बंध्यायो  
 षिता सिद्ध न देखे पाय ॥ ५० ॥ पुनः ॥ शस्त्र देड अरु षेड जन देखे मुडित होई ॥ विधवा तिय  
 अरु पति व्रता साय न ले जो कोय ॥ ५१ ॥ इति शुभा शुभ दूत लछन ॥ अथ रोग लछन दोहा  
 वर्ण प्रकृति सों जो मिलै धीर्य वंत है सोई ॥ और यत्ते दिखै वैद्य वस चिकित्सा ना की होई  
 ५२ ॥ अथ वात प्रकृति कथने ॥ अल्प केश कृश रूदन र मन चंचल वाचाल ॥ फिरे व्याम  
 ओ स्वप्न में वात प्रकृति की छाल ॥ ५३ ॥ अथ पित्त प्रकृति लछन ॥ तरुण सभें कुच सेत वैव

रामः  
६



हि वंत परस्वेद ग्रहगणदेसै स्वप्नमें क्रोधपित्तभनिभेद ॥ ५४ ॥ अथ कफप्रकृतिलछन दोहा  
जाकी बुद्धि गंभीर अति स्थूल अंग वल वंत ॥ स्निग्ध केश जल स्वप्न में धीर जश्लेष्म कहें  
त ॥ ५५ ॥ इति वातपित्तकफलछन ॥ अथ वातपित्तकफमास कथन दोहा ॥ भद्रौ श्रावण  
इति गिरमाह पौष आषाढ ॥ वायुराज षट्मास कहौ पंडितो पाठ ॥ ५६ ॥ अथ पित्तमास क  
थन दोहा ॥ आसू कार्तिक ज्येष्ठ त्रय चतुरमे नि वैशाख ॥ पित्तराज पंडित कहौ पण्डित ॥ य  
निकी साख ॥ ५७ ॥ अथ कफमास कथन दोहा ॥ मास दोई कफराज कहौ फागुन चैत वषा  
न ॥ कहें जु वारह मास जानहु चतुरसु जान ॥ ५८ ॥ इति मास ॥ अथ वातकोप कथन दोहा  
रूक्षतिक्त कषाय कटु जागर अमति य संग ॥ मल मूत्र रो कै जल तरै करै सवन सो जग ॥ ५९ ॥  
श्यामा कंगुनी वार कहौ अरु अजीर्ण उपवास ॥ सेवै श्रावण भाद्र वैवाय को पवै जास ॥ ६० ॥



वै०  
७

अथ वायु उपाय कथन दोहा ॥ स्निग्ध उष्ण वल्न वेतर सपुष्ट सात्त्व उवास ॥ स्नान तैल मर्दन कि  
ये होत पवन कानाश ॥ ६१ ॥ स्वादु अम्ल आतप अगनि तैल मांस सुरापान ॥ स्नेह से ॥ भोजन  
निरुह मेडन मर्दन जान ॥ ६२ ॥ उष्ण पान अरु तपन विधि पानाहार विहार ॥ शन तै वायु प्रसा  
त मुख पेडित कहो विचार ॥ ६३ ॥ अथ पित्त कोष कथन दोहा ॥ तीक्ष्ण गरम अरु अम्ल कटु आ  
तिपति स उपवास ॥ क्रोध लवण तिल दधिसुरा अलसी को जीभास ॥ ६४ ॥ भोजन अधिव ॥  
अरै शरदि ग्रीष्म के मास ॥ अर्द्ध रात्रि मध्याह्न दिन पित्त कोष परकास ॥ ६५ ॥ अथ पित्त ३ पा ॥ ६५  
कथन दोहा ॥ तिक्त स्वादु कषाय सवपीत वमन तरु छाया ॥ वारियंत्र अरु त्रिपत्य शमूग हच  
दन लाय ॥ ६६ ॥ निशाचोदनी अरु बीजना सर्पिंदी रक्त साव ॥ रेत से क अरु लेप तन पित्त  
शान्तिके भाव ॥ ६७ ॥ अथ प्लेष्म कोष कथन दोहा ॥ गुरु मधुर अति शीत दधि जया अन्न पत्रपा

समः

७



२८  
प्रमेलि ॥ ज्वरात्तीरकोपेभयहत्तुरतदिवावेरेलि ॥ २६ ॥ चोपाई ॥ गोचुरपीपलिधनीयालेह ॥ २७ ॥  
विल्वअजंवाइनेदेहि ॥ देवदारुअरुइंद्रयवलीजे ॥ गजपीपलिसमकटुकीदीजे ॥ २८ ॥  
दोहा ॥ प्रुंठीधातुकीमोचरसअजमोदासमभाई ॥ पीसिछाछसोपीजियैअतीसारनशिजाई ॥ २९ ॥  
इतिलघुगंगाधरचूर्णदोहा ॥ आववीजअरुजाइफलवडरुहआफुघालि ॥ जलसोलेपे  
नाभिपरअतीसारकोटालि ॥ ३० ॥ फूलाकः ॥ सौवीरपिष्टः सहकारकल्कोनाभिः प्रलेपादति ॥  
सारहेता ॥ ३१ ॥ इतिअतीसारकोलेपः दोहा ॥ मोषाविल्वअरुमोचरसलोदइंद्रयवधाव  
गुडसोंगोलीवांधियैअतीसारसवजाव ॥ ३२ ॥ इतिगुटिका ॥ इतिअतीसारचिकित्सास  
माप्तम् ॥ अथग्रहणीचिकित्सादोहा ॥ चित्रहिंगुअजमोदवचकणामूलठहसार ॥ ल  
वनपंचत्रिकुटासकलचूर्णएहसमधार ॥ ३३ ॥ गुटिकादाडिमरससहितपुनिविजौ



वै०  
३६

ररसलेई॥ ग्रहणी पाचन भूषमं दइ नै जा नि कर देई॥ ३३॥ इति चित्रक गुटिका दोहा॥ नागर  
मोथ पत्ती ससम कुडा छाल अरु वेल॥ पाठा कइ अरु धात की यह समाश करि भेलि॥ ३४॥ तंडुल  
जल अरु मधु सहित ग्रहणी रक्त की होई॥ अर्श प्रूल गुद प्रवाहिका हरै जोगा जोई॥ ३५॥ इ  
ति नागर चूरण दोहा॥ जाती फल चित्रक हरड चंदन श्रुंठी विडंग॥ ताली सदल उपकुं चि  
कापी पलि मरिच लवंग॥ ३६॥ लोचन वंश कपूर धर अक्ष समान सम भेलि॥ चातुर्जात क  
सप्तपल सिता सर्व सम देय॥ ३७॥ यह चूरण क्षय काश कों स्वास अरोचक रोग॥ ग्रहणी अरु  
अतीसार कों अगनि मोद्य कों जोग॥ ३८॥ उपजै कफ अरु वात कों पीनस अरु प्रतिश्याय॥ कु  
छ दोष सब एक हे स वैदूरि कै जाय॥ ३९॥ तं क ग्राही लघु दीपनी त्रिदोष शमनी राह॥ गव्य  
तं क निस्नेह शुभ ग्रहणी रोग कों नै ह॥ ४०॥ इति ग्रहणी चूरण॥ अथ कपित्थाष्टक चूरण

लेप

रसः  
३६



कविता॥ चित्रक अनारदाने श्रुंठीले॥ दविल्वगिरितितिडीजवानी दोप्यधावे फूललीजीये॥ सो  
चारमरिचचित्रातजंदलत्रुटिनागकेसरधनेयजीरानेत्रमालमीजीये॥ त्रिगुणऔषधमेलि  
रसगुणसितारेनिषट्गुणकौवभेलिचूराकरीजीये॥ अतीसारस्वासकाशअरुचिग्रहणी  
हिकागलगदक्षयीगुल्मइनकौहरीजीये॥ ४१॥ दोहा॥ कपित्थावकनामयहसारंगधरतैआ  
न॥ देजोसमजिविचारियहरीगनकौपहिचान॥ ४२॥ इतिकपित्थाष्टकचूर्ण॥ अथदाडिमाष्ट  
कचूर्णचौपाई॥ अठपललीजैदाडिमबीज॥ इकपलमेलिसुगंधकलीज॥ लोचनवालाअ  
रुनेत्रमाल॥ कर्षकर्षऔषधसवडाल॥ अठपलवीचसितामहिधरौ॥ जीराधनियापलइ  
ककरौ॥ ग्रंथिकत्रिकुटापलपलभाग॥ कीजैचूराणशास्त्रकेमाग॥ ४३॥ पार्श्वफूलअरुहदै  
कारोग॥ ग्रहणीअरुचिगुल्मकौजोग॥ मेदअगनिअरुजाकौकास॥ करैदूरिडाडिमाष्टक



रास॥४४॥ इति दाडिमाष्टकचूर्णं॥ अथ रसरन्नसमुच्चयात्तदोहा॥ त्रिकुटाटंकणसूतवि  
षगंधकशुद्धजुलेई॥ तामें कौडाभस्मकरिरसजंवीरीदेई॥४५॥ मर्दनकीजै एकदिन रसकों  
काहसुकाई॥ यावणमात्राबद्धरती घृतअरुमरिचमिलाई॥४६॥ ग्रहणी दीजै लेहयह ऊ  
परिपीजै तक्र॥ तुरतगवावै रोगकों जै सें अरिहरिचक्र॥४७॥ इति ग्रहणी रसः दोहा॥ एला  
तजतमालपत्रत्रिकुटाजीरेदोई॥ दाडिमतितितिडीमेलिसमसिताचौगुनीहोई॥४८॥ दी  
पनपाचनचूर्णशुभरुचिकरराजाजोग॥ तीनदोषग्रहणीअरसअतीसारहररोग॥४९॥  
इति त्रिसुगंधादिचूर्णं॥ अथ गुटिकादोहा॥ त्रिकुटाचित्रकचवकसमतीनंलूनयव  
वार॥ स्वेतजीरणीपलिजटासोचरदाडिमधार॥५०॥ सवसमऔषधआनिकैरसअना  
रपुद्देह॥ अक्षमानगुटिकाकरहुवातकफामयलेह॥५१॥ स्वासकासग्रहणीप्रवल्गुजा



हि अरोचक होई ॥ भूषप्रवल दीप जपचनं इन समनाहिन कोई ॥ ५२ ॥ इति दीपन पाचन ।  
गुटिका ॥ अथ लवंगादिचूर्ण दोहा ॥ लवंग उशीर कपूर शुद्ध कृष्णगुरु छड आन ॥ तजई  
साईची जाई फल कृष्णजीर सम जानि ॥ ५३ ॥ पीपलि चंदन तगर पुनि अरु के को लंत्व गदी  
र ॥ डोडे कशर नाग सम चूरण करी यह धीर ॥ ५४ ॥ औषध सै आधिसिता दी जै राजा जोग ॥ भू  
षवठावन वल करन स्वासका सह दोग ॥ ५५ ॥ रोचन तर्पण के ठहि कतम क स्वास अती सा  
र ॥ पीन सय द्वा अरु चि पुनि गुल्म मेह कोटार ॥ ५६ ॥ संग्रहणी तन स्थूल अति दोष तीन  
को नाश ॥ लवंगादि सब को कहै चूरण सब सै बाश ॥ ५७ ॥ इति लवंगादिचूर्णम् ॥ अथ कल्पा  
ण गुड कथन कवित्त ॥ ५८ ॥ पीपलि विडंग मूल पिप्पली तमाल इंड्र चित्रक जीरा धान्य राज  
वृक्ष ठानिये ॥ नागरत्रिकटु एला सक्षम मरिच तज नीलि नीत्रि फल मध्य अज मोद सा निर्ये



और नाग पिप्पली कलौं जी डार ह दी पनी सौ उत्तम क हार लूण सौ चल व मानिये ॥ और विडम  
 ध्य अक्षि डारी ये जू क र्थ क र्थ सूक्ष्म क प ड छान चूरन प्रता नियो ॥ ५८ ॥ क वित्त ॥ ३१ ॥ मुन काली  
 जै चार पल आठ पल ति वी वी च गुड दी जै तु ला एक आनि कै धरी जी ये ॥ मंद करौ पाव क प चाई  
 ली जै एक ठौर आवल व दर मान वल दे षि दी जी ये ॥ विंशति प्रमेह कृश धात ही सै द्वाण नर और  
 र द्वाण तिय संग पीन सहरी जी ये ॥ ५९ ॥ दोहा ॥ अगनि मंद वय द्वाण नर क्षयी रोग डर घात ॥ वे  
 ध्या पुत्र वती करै रूप अधिक दे जात ॥ ६० ॥ स्वर मेधा वय दृढ करन क द्यौर सायन आन ॥ रक्त  
 पित्त विद्रं ग्रह सदा पिनु मात्रा परमान ॥ ६१ ॥ महा कल्यान का एह गुड करै जु भद्राण कोई ॥ उ  
 त्त गी है सब ग्रंथ मैं वल करण ही होई ॥ ६२ ॥ इति महा कल्यान गुड ॥ इति अती सार संग्रहणी  
 प्रवाहि कार कृती सार चिकित्सा समाप्तम् ॥ अथ अर्श निदान कथन दोहा ॥ वात पित्त कफ



सन्निपुनिरुधिरसहजभनिषष्ट॥ अर्शभेदेयहजानियैहोईगुदातेकष्ट॥ ६३॥ कटुकति-  
क्तकाषायप्रमरूद्धशीतमदशोक॥ देशकालविपरीतितैकहनिमित्तएलोक॥ ६४॥ अल-  
पवहुतभोजनकियैलेघनयुवतीस्पर्श॥ पुरवाईआतपअधिकईनेतैजानौअर्श॥ ६५॥ त्व-  
चादोषअरुमेदपलआकृतिकहौवषान॥ वलयतीनकीठोडजहपलअंकरयजान॥ ६६॥  
जेघपीडअरुअलपवितअरुचिदेहकृशजोई॥ कुक्षिशब्दआरोपवहुऔगुनएतेहोई  
६७॥ अथरूपकथनदोहा॥ वेरखजूरकपासफलसरसोंबीजसमान॥ वायमवेशीजा  
नियेकटिशिरपीडाजान॥ ६८॥ अंकरछोटेपित्तकेशिथलहोतहैजास॥ उपमाजाकीजा  
नियोगुदादाहवैतास॥ ६९॥ कफकीकहियैस्थूलअतिअलपपीडअरुषाज॥ हाथस्पर्श  
पिछलवहुतगोस्तनजानहुसाज॥ ७०॥ सन्निपातअरुसहजकीसबलछनमिलि



होई॥ इनको वैद्य विचारिकै करै परीक्षा जोई॥ ९१॥ रक्तमवेशी पित्तप्रकृति वटकुं पल आकार॥ प  
रवाली समजानियै सवै रक्त की धार॥ ९२॥ उजवर्ण वलहीन सवमल वेधन कै जास॥ कृष्  
साध्य ए जानियो कछौ गुनी जन रास॥ ९३॥ अथ असाध्य लछन दोहा॥ हाथ चरण मुख ना  
भि गुद अंड शोथ बहु जान॥ गुदा शूल पुनि हृदय दुख कछौ असाध्य विधान॥ ९४॥ इति नि  
दाने॥ अथ चिकित्सा दोहा॥ शस्त्र अग्नि अरु दार सव भेषज चौथा एह॥ पथ्य अपथ्य वि  
चारिकै पीछे औषध देह॥ ९५॥ अथ अर्श लेप दोहा॥ कटु तोरी अरु हलद सम सै सपतै ल से  
जोग॥ सर्व ते उत्तम लेप यह हरै मवेशी रोग॥ ९६॥ रजनी पोहर दूध घसिले पम वैशी जाई॥ भि  
न्न योग को शात की लेप कीये नर हाई॥ ९७॥ वछी मूत्र करंज दल ऊपरि लावै पीसि॥ दुष्ट म  
वेशी नारहै इन सम नाही रीस॥ ९८॥ अथ स्वेद दोहा॥ गोमय पीडी जोग इक दूजै जव जड



आन॥ अथ रास्नासौ फटो पेचमवेत्तु जान॥ ७८॥ पत्रसुहोजनपीसिके अगनि संयोगे सेक॥  
 ७९॥ योगमै एकहे दुष्टमवेशी छेक॥ ८०॥ इति स्वेद॥ अथ गुटिका दोहा॥ तिलभस्मात्तकहर  
 डगुडसम करिली जै एह॥ कास स्वास ज्वर पोंडु सीह हरे मवेशी गेह॥ ८१॥ अथ प्ररणा पिंडी दोहा  
 मिरच भाग इकली जीये श्रुंठी भाग ले दोई॥ चित्रा आठ प्रमान करि प्ररणा सोल ह होई॥ ८२॥ इ  
 न औषध का न्द्रा करि दूणा गुडमहि घालि॥ पेठ अफारा गुल्म गट दुष्टमवेशी टालि॥ ८३॥  
 इति प्ररणा पिंडी॥ अथ छंदः॥ समत्रिकुट विफलानि शादानु अरु सुगंध त्रय मे लिये॥ चवकौ  
 डसौ फ विडंग या वालवण पेच त्रय मे लिये॥ अज मोद पीपली मूल विल्व गिरि हिंगु दारु दै स  
 म करौ॥ वच देड औषध अष्ट विंशति चूर्ण पीसि पात्र मै धरौ॥ ८४॥ टंक चारि चरणा गरम  
 पाणी योगा एरंड तेल का॥ अवलेह की जे चाटिली जे होई औषध सेल का॥ यह रोग हंता अ

तह



ता अर्शजेता स्वासकाशभगेंदरा ॥ हृदिपाश्वर्षशूलप्रमेहकामलपांडुरोगकोंहैहरा ॥ ८५ ॥ वसि  
 शूलसीहहरैगुदाकृमिअंत्रचूडिग्रहणीगमै ॥ आमवातअरोचकउदावर्तकभूतदोषइस  
 तैममै ॥ ज्वरदोषजाकोंप्रजानाहीविजययाधैस्त्रीजणै ॥ यहविजयचूरननामजाणैव्याधि  
 सबकोयहहणै ॥ ८६ ॥ इतिविजयचूर्ण ॥ अथपंचसमचूरणदोहा ॥ शुंठीहरदपीपलितिवी  
 सोंचरसाथमिलें ॥ ८७ ॥ जठरशूलआध्मानअर्शआमवातसबजाई ॥ ८८ ॥ इतिपंचसमगरम  
 गरमपाणीसोंटेकदोईदेणदोहा ॥ <sup>पारा</sup>अरत्नचिनाइइयवशुंठीसैंधववेल ॥ चूरनदीजैतक  
 सोंरोगमवेशीरेलि ॥ ८९ ॥ लीजैमाषणधेनुकातामहितिलघालेति ॥ वहतदिवसजोबा  
 ईशैरक्तमवेशीहंति ॥ ९० ॥ गजकेशरनवनीतसितएकठोरकरिजोग ॥ सिद्धयेगपेडित  
 कैहोरक्तमवेशीरोग ॥ ९१ ॥ कुडामशलीशुंठीशामवचशूरनलेआन ॥ चूरणपीवहतक



ॐ करै मवेशी हान ॥ ८१ ॥ सैंधा श्रुंठी अजमोद चित्रक और मरिच सम ठेलि ॥ तक्र साय जो सात दि  
न अर्श पोडु गंदरै लि ॥ ८२ ॥ अथ अगनि मुख चूर्ण दोहा ॥ भाग एक लेहि गुकौ दूणी दस महिषा  
लि ॥ त्रिगुणी पीपलि श्रुंठी चतुःपंच जवानी डालि ॥ ८३ ॥ षट्गुण चित्रा हरड द्वै अठ्गुण कुठ  
रलाई ॥ चूर्ण पीपे पीसि कै उस्म वारि सों लाई ॥ ८४ ॥ दही मस सों पान करी कह्यो वात ह चूर्ण  
उदर अजीराण ही है विष ह रै मवेशी तर्ण ॥ ८५ ॥ यह औषध दीपन कह्यो करै मूल को नाश  
कास स्वांस द्यौरोग को लावै आवै रास ॥ ८६ ॥ इति अगनि मुख चूर्ण ॥ अथ नारायणी चूर्ण क  
वित्त ॥ ३१ ॥ जीरक <sup>सो ग</sup> त्रिफल वचा त्रिकुठ ह पुषधान्य कुठ सटी अजमोद यल जीरा दी जीये ॥ चि  
त्रक विडंग वायु अजग धाशत पुष्पा वीरज टापे चतुर्ण दो इषार दी जीये ॥ दीपनी मिलाई  
कटु ग्रंथि सव प्रत्याहार चोक धरि उन ती संमात्रा सम की जीये ॥ दुद्रफला दो इभाग तृत्ति



विभागमेलिदेतीलीजैतीनअंशवज्रीहोंकरीजीये॥८९॥ दोहा॥ औषधनोतनसकलकृति  
 छाणीसुखवास॥ यहचूरनरेचकउदरकरैरोगकानाश॥९०॥ पाचनरुहेहनआदियह  
 स्निग्धकोष्ठकोजोग॥ कहोंऔरसवनामलेतवजानैसबकोइ॥९१॥ कवित्त॥३१॥ कास  
 स्वासपोंदरोगज्वरंकुष्ठगलग्रहधूमध्वजमंदहोतहृदेरोगगानिये॥ औरजोग्रहणी  
 गदगुदाकेनिध॥ टव्रणअनुपानधेनुदुग्धइनहीसोंसानिये॥ गुल्मकौवदरनीररा  
 स्नाकापवातरोगअरसदाडिमजलघृतविषयानिये॥ धेनुतक्रपेटरोगरवणिदु  
 श्मजोगअजीरनकौउष्मजलअनूपानजानिये॥१००॥ दोहा॥ पेटपीडसोंतीरजल  
 दहीमस्तविदुभंग॥ देहुसद्यआध्मानगदअनूपानयहसंग॥१॥ इतिवृद्धीरायणी  
 ॥ अथपंचदोहा॥ इकपिचुलीजैपीपलीतिवीएकपलमान॥ सेतयेडपलमेलि



ॐ को जे कपड डान ॥ २ ॥ जाहि उदर आ ध्यान विद को दर क फल पित्त ॥ पिचुमात्रा चरण सहते  
प्रलरोग को मित्त ॥ ३ ॥ इति लघु नारायण चरण ॥ अथ अं पण्य ॥ रेच लेप अरु रक्त घन अरु अग  
निहयी यार ॥ माठी चावल कुलत्थय व भोजन यह सुख कार ॥ ४ ॥ अथ अण्य पण्य दोहा ॥ उत्कट  
आसन शरित जे लवे गरो धतिय संग ॥ चढे अश्व अरु गडिका करै मवेशी जंग ॥ ५ ॥ इति अण्य  
पण्य ॥ इति अण्य जे न चिकित्सा समाप्तम् ॥ अथ अग्नि मोघ निदान दोहा ॥ मेद तीक्ष्ण अवि  
षम सम अगनि मोघ है चार ॥ माधव क ह्यो विचार सब उन ते मन मै हि धार ॥ ६ ॥ अथ चिकि  
त्सा दोहा ॥ से अरु हर डै पी पली चरण चित्रा मेलि ॥ उस्मवारि सो जे पिये न हव न्हि कोरे लि  
७ ॥ अंठ पी पली हर ड समल वण साथ अज मोद ॥ उस्मवारि अथ वातरुण त क दुधा होत  
विनोद ॥ ८ ॥ हर डै नगर चरण करिता महि मुन का पाई ॥ उदर रोग अरु भूख बह प्रात ह कालै या



वै०  
४२

ई॥ म॥ पीपलीं मुंठी हरीतकी सों चरति वीं समान॥ तम नीर सों पीजीये अगनि में दकी हान॥ ८॥  
अथ दुधा करन गुटिका दोहा॥ विफला विकुटा हिं गुलोन अरु अजवाइन में लि॥ सम गुड  
गोली की जीये में अगनि को रेलि॥ १०॥ विफला विकुटा वाइ विडंग॥ सेंधा सों चरति वील  
वंग॥ द्विग अजवाइन चित्रा ठान॥ दोनु जीरे अनारदाना आन॥ ११॥ इन औषधों चरण  
की जे॥ नीवू को फेंड दोनु दी जे॥ प्रात स में दोइ टंक जु याई॥ में द अगनि को तुरत न साई॥ १२॥  
इति में दारिद्र्य दोहा॥ पीपली हरडै सेंधु सम चरन ली जे टंक॥ उष्म जल सों पीजीये  
अनल होई ने॥ संक॥ १३॥ हरडै मुंठी मिलाई सम दुनी मुन का पाई॥ अरु सेंधा जो में लि  
ये अन्न वत्त असा पाई॥ १४॥ दाडिम पीपली हरड सम भिन्न भिन्न गुडामें लि॥ अम अजी  
होरो गुग्गुलु पत्र लवंध को यह रेलि॥ १५॥ वकी हरड का चूर्ण करि भोजन आगे पाई॥ जीभ के

रामः  
४२



अधनकाडा द्यो जोग समुजाई ॥ १६ ॥ आद्रक सेंधा लाई करि सावे नरना कोई ॥ हृदये अगनि दी  
पन करे प्रवेक भूषका होई ॥ १७ ॥ हरडै पीपलि श्रुंठी समझन काकी जै चूरा ॥ भूरु डेदी पन  
करै हरै विदेस को तरा ॥ १८ ॥ अथ विडंगादि चूरा दोहा ॥ सोचर चित्रा जी रहै हरडै वाय  
विडंग ॥ त्रिकुटी अरु अजवा इनी अजमोदा धरी संग ॥ १९ ॥ आमल वेतस विडल वण  
धान्य तित्ति दी जेलि ॥ पर्वत कूट पचै जहो कहा भोजन काषेलि ॥ २० ॥ इति विडादि चूरा  
दोहा ॥ त्रिकुटी सेंधा वजी रहै हीग भाग अजमोद ॥ टेक टेक ए भाग ले चूरा परम प्रमोद  
२१ ॥ प्रथम कटु भोजन करै समै घृत सोली जे मेल ॥ वात गुल्म जठराग्नि को हिंजवा  
हृक कीषेल ॥ २२ ॥ इति हिंजवा हृक दोहा ॥ हरडै पीपली श्रुंठी विल अरु करंज सम पाई  
तामै मिश्री सम कही वडवा मुख कहवाई ॥ २३ ॥ कही जु चूरा वैद्य मुख अबुभव की

विल



वै०  
४३

नौगह॥ गुरुभोजनजाके उदरजरेशीघ्रयहलेह॥ २४॥ इतिवडवामुखचूर्णदोहा॥ गजकेशर  
तजगलचीतीनदोईअंशाक॥ सुंठीपीपलीमिरचाबटपेचचारौनेक॥ २५॥ सबओषधइ  
कठोरकरीतासुमिसरीमेलि॥ चूरणदीपनाकह्योअग्निमंदकोपेलि॥ २६॥ इतिअग्नि  
मोद्यचिकित्सा॥ अथअजीरणचिकित्सादोहा॥ हिंगुपत्तीससोचरवचाहरडैविकुटा  
जोग॥ तीव्रअजीरनशूलसवणतेजावैरोग॥ २७॥ ओषधअन्नप्रभातमैअजीरनको  
नहीजोग॥ संध्याकालेदीजीयेपरभातैविषरोग॥ २८॥ इतिअजीरणचिकित्सा॥ अथवि  
सुचिकाओषधदोहा॥ संधाकूठजुदोइसमकल्कचुक्रअरुतेल॥ २९॥ मर्देनकरौविस  
चिकाशूलविवारनखेल॥ ३०॥ अश्वकर्णदंतीतिवीपीपलीपीसहमाहि॥ कोशजलसो  
पीजीयेखल्लोशूलसवजाहि॥ ३१॥ जातीफलअरुचुक्रसममेलितेलतिलमाहि॥ अ

शमः  
४३



इससे मर्दन कीजिये खल्लरोग सब जाहि ॥ ३२ ॥ तेल तिलों का आनि कै कर पद मरु अंग ॥ सि-  
द्ध योग में एक होत विस्सूची भंग ॥ ३३ ॥ जाहि विस्सूची होत है ताको तया अतीव ॥ लें का करि  
पाइये प्यास बुजावे जीव ॥ ३४ ॥ अथ अर्क तेल दोहा ॥ प्रस्य लेहु दल आकर स अर्ध तूर रस  
मेलि ॥ यो हरि ओर सु हो जना प्रस्य प्रस्य रस भेलि ॥ ३५ ॥ द्वैपल सैधव कुठ द्वैकल्क जु करि  
ये एह ॥ सम अर्ध को जी दही तेल प्रस्य में देह ॥ ३६ ॥ पचौ तेल मंदाग्नि सौ सिद्ध भाजन म  
हि घालि ॥ खंज पे सु खल्ली विस्सूची आम पाच गृध्र टालि ॥ ३७ ॥ इति अर्क रसादि तैले ॥ इ-  
ति अजीर्ण विद्वेचे का चिकित्सा समाप्तम् ॥ अथ कृमि चिकित्सा कथन दोहा ॥ कृमि क  
हि ये द्वैभोतिके बाहिर अंतर भेद ॥ इन तें नर रोगी हवै इन सों पावै भेद ॥ ३८ ॥ एक कृमि  
उदर मध्य द्वितीय वसन यूकादि जीव द्वैभोतिके तिस का विचार माधव निदान तें जा



वै०  
४४

नना॥ ३४॥ अथ चिकित्सा दोहा॥ हर डै सें धव दार युत के पिल बाय विडंग॥ तक्र साय पी वे सु  
वह कृमि को रहै न संग॥ ४०॥ कृमि अज वा इ न आ न कै जल में रा यो रा ति॥ प्रात पी सिद्धाण  
हु व स न पी ये स॥ कृमि जा ति॥ ४१॥ वा इ विडंग सें धा ति वी स म क रि पी सिद्धा ह॥ त सो द क सो  
पी सिण पी य कृमि ना श करे ह॥ ४२॥ नी व छाल त्रि कु टा ति वी स म क रि पी सिद्धा ह॥ नी र उ स्स  
सो पी जी ये कृमि को हरै जु ए ह॥ ४३॥ नी व छाल त्रि कु टा ति वी त्रि फ ला अ इ व च पा ड़ खा दि  
र कु डा विडंग स म चूर न करे ह मि ला ई॥ ४४॥ धे नु मू त्र सो टां क इ क सा त दि व स प र मा न  
हरै कृमि के रोग को उ द र शु द्ध कै जा न॥ ४५॥ सो र ठा॥ छा क वी ज को पी स॥ घृत सो दो जे मे नि  
कर उ द र कृमि को पी स॥ क ह्यो जु वै द्य वि चारि कै॥ ४६॥ इ ति कृमि रोग चिकि॥ समाप्ता  
अथ पांडु गंग निदान चिकित्सा कथं न दोहा॥ पा च भां ति को पांडु क हि वा त पित्त क फ जे ई

समः  
४४



सन्निपात अरु मृत्तिका पांडुरोग यह होई ॥ ४७ ॥ दिवा स्वप्न तीक्ष्ण अमल लवण मधु मृत जान ॥ रक्ति  
चाको दूषिके ॥ ४८ ॥ अथ वात पांडुरोग लछन दोहा ॥ त्वचा मूत्र अरु नस वे  
क्षे कृष्ण अरु लाल ॥ कं पतोद आना ह भ्रम यहै वात की चाल ॥ ४९ ॥ अथ पित्त पांडु लछन दोहा ॥ पीत  
नेत्र अरु कृशत जल तृषादा ह ज्वर होई ॥ विष्टा भेदन पीत सम पित्त पांडुता होई ॥ ५० ॥ अथ कफ पा  
ंडु लछन दोहा ॥ तं श आलस प्रपथु कफ गेय न मूत्र त्वग खेत ॥ तन भारी मुख गिरि यहै प्रभा कफ दे  
त ॥ ५१ ॥ अथ मृत्तिका उपद्रव कथन दोहा ॥ अक्षि कूट अरु गंड भ्रू चरण नाभि कै शोज ॥ रुधिर प्रलेख  
सोमल डवै घटै दोह की उज ॥ ५२ ॥ इति साध्य ॥ अथ पांडु चिकित्सा दोहा ॥ सात दिवस गो मूत्र लेपी  
वैजो परभात ॥ अथ वा चूराण लेह का जल सोपी वै प्रात ॥ ५३ ॥ त्रिफला वांसा कौड नीव छिन्नो द्रव कै  
रात ॥ करै काथ अरु सहित युत पांडु कामला जात ॥ ५४ ॥ लोह चून त्रिकुटा जु तिल द्वै द्वै टंक जु आ



वै०

४५

न॥ सवसममादिकमेतिकैगोलीसहितमिलाई॥५५॥ प्रातसमैलेतक्रसोंपांडुरोगसोंजोग  
औरकामलादोषहेताकोषोवैरोग॥५६॥ लोहमैलसंतप्तकरिधेनुमूत्रसोंसीच॥ यहचर  
णमधुसर्पिसोंभोजनआदिकेबीच॥५७॥ अग्निजननदोषनप्रवतलशोथपांडुकारोष॥ इ  
नऔषधकेयोगतेनाशेंइनकेदोष॥५८॥ अथनवायचूर्णकथनदोह॥ त्रिफलात्रिकुटा  
मुस्तभनिचित्रकवायविडंग॥ समचूर्णघृतदोइयुत्तरजलोहमेले॥ ५९॥ पांडुरोग  
अर्शहृद्रोगकुष्ठहेतकामलानाश॥ प्रातसमैभक्षणाकरैरहेनरोगकीवास॥ ६०॥ त्रिफला  
बीजैअशत्रयतैसैंत्रिकुटालीज॥ चित्रकवाइविडंगसमतीनभागलेदीजु॥ ६१॥ शिला  
जीतअरुजोहरजपंचभागयहलेह॥ तैसैंसोवनमदिकाशुद्धदेखिवोदेह॥ ६२॥ आठ  
भागतामहिसितापीसिचूर्णकरिलेह॥ सहितघालिलोहपात्रमैंइद्वेवरमृत्रादेह॥ ६३॥ अ

रामः  
४५



गनिदेहि दीजे सरसजोगराजयह आन ॥ पांडुरोगविषमज्वरजाहि अरोचकजान ॥ ६४ ॥  
हृमाहि काकोमलामेहकंसन अरु स्वास ॥ कष्टमृगीकेरोगको क ह्योरसायनयास ॥ ६५ ॥ इति  
नवायसचूर्ण ॥ लोहपासगोदूधले करै कायजलजोग ॥ दिवससातके पानते नोये एते रोग  
॥ ६६ ॥ पांडुरोगक्षयजोराज्वरग्रहणीपीडितदोष ॥ भोजनपथ्यकरै सदा कहे न हो वैशो  
॥ ६७ ॥ मरिचशुंठी अजमोदपुनि विजसै धवपास ॥ आम्लतक्रसो सात दिन करै पांडुका  
नाश ॥ ६८ ॥ इति चित्रकचूर्णदोहा ॥ सितातिवीपल आधले जलसो पीवै जास ॥ पित्तते जा  
ने कामला करै शीघ्रयह नाश ॥ ६९ ॥ त्रिफलावासानिवभृकडूनीवगिलोई ॥ मधुसो दीजे  
कायकरिकमलपांडुकोषोई ॥ ७० ॥ सतगिलोईचाटो सहत कै त्रिफलामधुजोग ॥ रसवा  
सामाबो मिलै जाई कामलारोग ॥ ७१ ॥ इति तीनयोगः ॥ अथ कामलाचंजनदोहा ॥ गुग्मार



वै०  
४६

संजनकरै कामलानाशकरै॥ चाहे कामलदूरिकरितक अशानकोंलेई॥ ७२॥ लोहचूनअर  
हेहलदत्रिफलाकोडमिलाई॥ घृतमधुसोंजोचाटहैतुरतकामलाजाई॥ ७३॥ इतिलोहचूर्ण  
कामलाकोंदोहा॥ विकुटाहलदअरुआवरेलोहचूनकोंमेनि॥ सितादोदघृतलोहदेमे  
दकामलारेनि॥ ७४॥ इतिधात्रीलोहकामलावायकोंदोहा॥ गेरुहलदअरुआवरेअंज  
नकरियेनेन॥ कमलवायनाशै॥ कलसवओषधमेंअन॥ ७५॥ इतिकमलवायअंज  
न॥ अथपण्यदोहा॥ छट्ठिविरेचनजोणयवगेहेसाठीआन॥ मृगमसूरिअरुआठकीप  
याहेआन॥ ७६॥ फललीजेवंदालकापीसिपोटलीकीज॥ नासासंघेप्रवासकरिजाहिका  
मलादीज॥ ७७॥ अथअपण्यदोहा॥ धूमपानमैथुनसुराभारीअन्नहैसोई॥ कोधधूपपेट  
कचठामांडुविवर्जितहोई॥ ७८॥ इतिपांडुरोगनिदानकमलवायचिकित्सा॥ अथरक्त

नामः  
४६



पित्तचिकित्सा दोहा ॥ घर्मशोक व्यायामश्रम अतिप्रसंग स्त्री होई ॥ लवण चार तीक्ष्ण उषध  
कटुक आम्ल हे सोई ॥ ७८ ॥ पित्तविगुण ता होई जो सवै नासिका अंग ॥ द्विधा भेद है रक्त के अ  
र्ध ऊरध परसंग ॥ ७९ ॥ अथ रक्तपित्तचिकित्सा दोहा ॥ वासादाय हरीतकी करै काय समभा  
ई ॥ सिताक्षौद्र प्रतिवाप दे रक्तपित्त नर हाई ॥ ८१ ॥ हरडै मधु संयोग करि पाई प्रातः जोग ॥ दी  
पन पाचन एक द्यौरक्तपित्त हर रोग ॥ ८२ ॥ श्लेष्म शूल अतिसार हर कार साय वै जा स  
औषध कंद्यो प्रशस्त य हर रोग इनै का नाश ॥ ८३ ॥ छाग दुग्ध प्रशस्त का हि रक्तपित्त को जो  
ग ॥ धेनु दुग्ध जल पंचगुण करहु काय सलोग ॥ ८४ ॥ द्राक्षा नागर काय करि रक्त प्रवाह  
कों देई ॥ एती नौरक्तपित्त को इन को नाश करेई ॥ ८५ ॥ चंदन लोध्र उशीर विल्व मोषानं लमिला  
ई ॥ अंगुवर अरु इद्रिय वमालाने चरनाई ॥ ८६ ॥ पाठा उत्पल धातु की अरु पत्ती ससम ठाई ॥ दा



डिमत्वचाईलाईचीगजकेशरसमभाई॥८७॥ नीलकमलअरुमोचरसअरुमजीठसमआ  
 न॥ पद्मरागअरुशर्कराआम्रबीजसममान॥८८॥ फलजेवूसमचूर्णकरतेडुलजलसोपी  
 य॥ मधुसंयोगाजातुहेरक्त रोगकीजीय॥८९॥ आमदोषज्वरअर्शपुनित्तयामोहअतिसार  
 रजवैधनस्त्रीकोकह्योछट्टिमेटिहेभार॥९०॥ रहेनगर्भतियकेउदरआपनकरैजुएह॥ क  
 ह्योजोगक्रुधिअश्विनीरक्तपित्तदेह॥९१॥ इतिचंदनादिचूर्ण॥ अधपेठारखंडः दोह  
 पुरातन्नपेठावृद्धअतिकठिनहोईतेवलीज॥९२॥ त्वचाअस्थिसवकाठिकेऔरविव  
 र्जितबीज॥९३॥ तिसिवीचकेकूष्मखंडतामहिघीउमिलाई॥ गाठवस्त्रमहिछाणिज  
 लरायोभजनकरेई॥९४॥ वसनवीचकेकूष्मखंडतामहिघीउमिलाई॥ प्रस्थाकगुरे  
 मुखसुएवारिवीचमहिपाई॥९५॥ मधुआम्रजवहोईसवतवरायोलेपिंड॥ छप्पा



जलजो लजीयेतामहि शतपल षेड ॥ ६६ ॥ मलीयुक्ति सौपात करितामहि औषध देई ॥ धनीया  
मरिच जिंधस शुक्ति शुक्ति सवलेई ॥ ६७ ॥ सूक्ष्म कीजे छाणि करितामहि पातरलाई ॥ दावी  
सेतीम दिखे गाठा केतु चवाई ॥ ६८ ॥ मात्रा दीजे देखि वलकास स्वास दत दीण ॥ दूह छुटि ज्व  
र तृषत जन अस ह्वे वलकाहीन ॥ ६९ ॥ हृदये पीड अस रक्त पित्त यक्ष्मा कृष्ण स्वर भंग ॥ पीन  
सर्को अति जोग हेव ठे कामका अंग ॥ ७० ॥ रहे पण्य अस वाईय होइ पुष्ट वलवान ॥ कह्यो षेड  
कूष्मांडाइन हीरोग प्रधान ॥ १ ॥ इति कूष्मांड षेडः ॥ अथ नासारक्त उपाध कथन दोहा ॥ दाडि  
म फूल हरीत की दूव कसुं भरलाई ॥ सीतल जल सेना शिंदेर कतना सिका जाई ॥ २ ॥ अथ हि  
चकी औषध चोपाई ॥ दूव हरड दाडिम की कली ॥ नासाले तलो हन कहरि ॥ माषी वीठला वा  
रस लेई ॥ हिचकी जाई नास जोई ॥ ३ ॥ दोहा ॥ चंदन लोद प्रियंगु षस हरडै धावे फूल ॥ महल



ठी अरु सारि वामो घाले समतल ॥ १० ॥ सठी चावल वारि सों टेका एक परवान ॥ तामें मे लो शर क  
 रारक्त पित्त की हान ॥ ११ ॥ घृत में भू नौ आवरे पी सह जल महि आन ॥ मस्तक की जेले प्रय हर  
 कत न हो वे प्रान ॥ १२ ॥ दाडिम फूल अरु दूवर सशीतल जल सों सींच ॥ अथ वालक्त कहर  
 त मंडार हुना सो वींच ॥ १३ ॥ इति ने स्पे दोहा ॥ एलात जत मान पत्र दाषणी पली आन ॥ आध  
 पल ली जीये और एक पल जान ॥ १४ ॥ श्याम दाष खरजर पुनि सिता यक्षिका होई ॥ चूरण  
 गोली सह त सों घाई कर्षवल होई ॥ १५ ॥ कास स्वास ज्वर छटि भ्रम मूर्च्छा स्वर रस भेद ॥ हिक्का  
 तृष्णा शेष क्षय आद्य वात को घेद ॥ १६ ॥ मुख नासालोह गिरै यूकै लोह संग ॥ जाहि अरोच  
 क पाश्र्वी अर्ति गोली घाई अभंग ॥ १७ ॥ एला कहिये गो टिकारक्त पित्त को घाय ॥ मोदक तो  
 प्येण एक श्री कंहे रोग संव जाय ॥ १८ ॥ इति एलाद्रि गुटिका दोहा ॥ अधोगसन को छटि दै



ता

ऊर्ध्वगमनं कोरेच ॥ दो वें ले घन शस्त है क ह्यो एह में पेच ॥ १८ ॥ मृगम सर अरु चणो बल्लम  
ठीचा वला जोग ॥ को ड्रव यव प्रशस्त है इन ते जावे रोग ॥ २० ॥ पीपली सिता इला इचीत जा  
लोचन सम मे लि ॥ मधु घृत सौ चाटे यहै श्वास कास कोरे लि ॥ २१ ॥ पार्ष्ण्यूल अरु भूषम  
दहस्त पाद अंग दाह ॥ जाहि अरोचक सुप्त जिह्व ज्वर कफ लोह काहि ॥ २२ ॥ इति शीतोप  
नादि चूर्ण दोहा ॥ वासाली जे प्रस्य इक द्वे पल पीपली लेह ॥ सोलह पल सित प्र केरा प  
स्य द्वे घृत को देह ॥ २३ ॥ मेद अगनि परिपाक करिता महिम धुपल आठ ॥ लेह सदृश जानी भ  
ई धरो रुवी के काठ ॥ २४ ॥ पार्ष्ण्यूल हृदि प्रल को स्वास कास है जास ॥ कही जु वासालेह  
यह रक्त पित्त ज्वर नाश ॥ २५ ॥ इति वासालेह अथ प्रस्य प्रस्य ॥ लोहिते छर्दे ये घृतुं बहु शो  
लोहिते क्षणः ॥ लोहिं झार दर्शी च म्रियते रक्त पित्तिकः ॥ २६ ॥ इति रक्त पित्त चिकित्सा ॥



वै०

४८

अथ यद्माचिकित्सा दोहा ॥ वेगरोधत्रयदोषतेजस्य अरुसाहसमानि ॥ विषमाशनतेयद्मागदभे  
दचाराजानि ॥ २७ ॥ माषनमधुअरुशर्कराताकीचटनीबाई ॥ क्षयीरोगकोशस्तहेनिरभयदे  
हरला ॥ २८ ॥ तालीसमरिचअरुशुंठीपुनिपीपलीलोचनवेश ॥ भागयथोत्तरलीजीयेकर  
होएकठेअेश ॥ २९ ॥ द्विगुणसिताचूराकरहदोषदेखिकेदेह ॥ छर्दिशूलदरपांडुकोअ  
तीसारकोएह ॥ ३० ॥ स्वासकासग्रहणीअरुचिमूठवातश्रीहरोग ॥ हरैइएतेदोषकोएही  
दीपनजोग ॥ ३१ ॥ लघुकहियेतालीसएचरनजोगप्रधान ॥ सारंधरतेदेखिकेकहोयेप  
महिअनि ॥ ३२ ॥ इतितालीसादिचूर्णश्लोकः ॥ तालीसपत्रेश्रीपुष्पचातुर्जातेसमस्तकी ॥ षड्  
षण्त्वंगश्रीगुणकोलोजनेसमे ॥ ३३ ॥ चूर्णचतुर्गुणसितेतालीसाद्येदयापहे ॥ कासखा  
सहचिह्नकफघ्नलुनिह्दीपनम ॥ ३४ ॥ इतितालीसाद्येचूर्णदोहा ॥ मिश्रीपीपलीशुंठीसम

शुभः



देवकुसुम आसगंध जल सौं पीजै पीसि कै क्षय रोग को फेध ॥ ३५ ॥ त्रिफला श्रुं ठी विडंग तज  
पीपलि भिरचल वंग ॥ मोथा पीपलि मूल त्रुटि देवदारु सम अंग ॥ ३६ ॥ पद्मराग अरु राग  
नांग जंघार सुमिलाई ॥ सब तै दूनी शर्करा क्षय रोग मिटि जाई ॥ ३७ ॥ लौंग आक के फू  
ल सम गोली की जै पीसि ॥ क्षय रोग को नाश करै कृपा जगदीश ॥ ३८ ॥ इति क्षय रोग  
को गोली ॥ अथ च्यवन प्राश निरूपते कवित्त ॥ ३९ ॥ पाटला कुंभेर मोथा अगर जीवंती दा  
व जीवक अश्वभदो नुं इट सठ वानिये ॥ चंदन विदारी वंसा गोखरू कडारी दोनु पी  
पली तिलोइ डोडे अग्नि मंथ सा निये ॥ षटतलार्यणी शाली और पर्णी पृष्ठिक ही चार  
माख मुद्ग पर्णी मेदा सटी आनिये ॥ जूगी वला विल्व त्रुटि पुष्कर त्रिपट पण्या पापंडा प  
लास पल दौर श्रुक्ति शानिये ॥ ४० ॥ कवित्त ॥ ४१ ॥ पंचशत आवरे हरेई लीजै एक ठौर



कै०  
५०

जलद्रोणवीचपाईपरिपक्कीजीये॥ जंवजाण्याखिन्नभाएकुलीवीचकाठिलयेवसनसो  
छाणिजलकडाहवीचदीजीये॥ तामेंमेलेतैलघृतद्वादशपलनिचारुषट्पलमधुदारज  
लमेंपभीजीये॥ आधातुलाघोडलीजेचारपलवेंशदीजेकाणालीजेदोईपललेहज्यो क  
रीजीये॥ ४०॥ दोहा॥ कुंकुमतज्जइलाईचीडारहुयत्रतमाल॥ पलपलवीजेहसवसूक्ष्म  
मपीसिकेडार॥ ४१॥ सवइहकठोरमिलाइकैयुगतिपचावहलेह॥ शुभमहरतलेषिके  
तवयानेकोदेह॥ ४२॥ कासखासक्षतदीणवर्णअगनिबलवृद्ध॥ वातरकतस्वरभंग  
कोतिप्रहंषकोसिद्ध॥ ४३॥ वलमेधाअरुकोतिस्मृतिमूत्रकुक्षुकोह॥ वालवृद्धको  
अष्टहेक्तपित्तकोदेह॥ ४४॥ सेवैनितअवलेहयहच्यवनप्राश्रुषिवाक॥ कद्यौरसाय  
नयुक्तिकरिइनसमन्हीपाक॥ ४५॥ इतिच्यवनप्राश्रुषिवाक॥ इतिराजयद्वमाचि॥

शुभ  
५०



किंत्सा अथकासस्वासहिक्का निदानं दोहा ॥ गुरुविदाहिविष्टं भरजप्रशशीतजलस्नान  
अपतप्यं आतप्यं अनिलअध्वभारप्रमजान ॥ ४६ ॥ कफकृतभोजनरूक्षपुनिपवनधु  
मवेगरोधकासस्वासाहिकामनुजइनतैउपजेवोध ॥ ४७ ॥ रुक्षअन्नव्यायांमरजवेग  
रोधसैकास ॥ वातपित्तकफक्षतक्षयीकहेपंचपरकास ॥ ४८ ॥ अथस्वासांमदोहा ॥ क्षु  
द्रतमकअरुछिन्नमहऊर्ध्वपंचवैस्वास ॥ याहितैसवदोषहेतातैकरियेनाश ॥ ४९ ॥ हि  
क्कांमकथनदोहा ॥ क्षुद्रायमलाअन्नजामहतिगंभीरापंच ॥ कहीपंचप्रकारहिक  
करहुचिकित्सारंच ॥ ५० ॥ लछनमाधवमैंकहेतातैदेखिविचार ॥ साध्यअसाध्यकौस  
मकैकरहुचिकित्सार ॥ ५१ ॥ अथकासस्वासचिकित्सादोहा ॥ पीपलिपुष्करमूलशुंठीमो  
थाहरडमिनाई ॥ गुडसोंगोलीकीजीयैकासस्वासमिटजाई ॥ ५२ ॥ कटुत्रिकुटिफलारास



वे०  
५९

नाछिन्नाचित्रविडंग॥सवसमलीजैशंकराकासस्वासहरअंग॥५३॥त्रिकटाअरुद्रेवदास  
समयोरविशालामूल॥तामैमिश्रीडारिकैऊईस्वासकौचूर॥५४॥अथकालाग्निरसदोहा  
पीपलिहरडेअरुअसगंधकवासालेह॥वृद्धषडुत्तरचूर्णकरप्रतववृत्तपुटदेह॥५५॥दो  
जैनावनवीसइकमधुसोषावैजास॥दोहरतीरसकासकौतवहरहीनाश॥५६॥इतिरसवा  
गभटातदोहा॥मोथाभागीपीपरीपुष्करमूलकचूर॥काकडाअंगीमिरचसमअरुनिशोत  
महिपूर॥५७॥सूक्ष्मपीपिचूरनकरैजलसोपीवैजास॥प्रातसमैजौलीजीयेसासस्वासकौ  
नाश॥५८॥पुष्करमूलकुलत्पशुंठीकडारीवृषमेलि॥वारिउस्मसोपीजीयेत्वासकासकौ  
रेलि॥५९॥शुंठीभडंगीपीपलिकाकडअंगीअडहि॥लेहछीलकुमारिसजलसोगोलीभ  
दि॥६०॥कह्योमानदंक॥इयहमुखमैराबैरानि॥ताकोरसमुखमैधुनैकासस्वाससवजा

रसः  
५९



त॥ ई॥ वासापीपलीं शुभं समगोलीं मधुसोमेलि॥ टंक एक भजन करै बोसी को यह पेलि॥ ई॥  
चवक कंडारी शुभं शुभपीपलिसम करिपीसि॥ तप्तवारि सों टंक इक बोसी धोसी पीसि॥ ई॥  
यवाधार पीपली हरड सयवा शुभीर लाई गुड सों गोलीं मेलि कै सवै घंघ मिठ जाई॥ ई॥ की  
करि छिल अरु आवर हर वहे डासाय॥ इन की की जै गो टिका घंघ सालिये नाय॥ ई॥ मिर  
चजुली जै टंक तीन पांच कवडी लोह॥ दोई टोक विषवी चदे सदा मणी सियै एह॥ ई॥  
जोली की जै मंग सम कवडी की जै राय॥ करै ना सक फ घंघ को कहौ शास्त्र की साय॥ ई॥  
श्लोक॥ शुभी कंडु विक फल त्रय कंडकारी भागी सपु कर जटाल वाण निपेच॥ चूर्ण॥  
विषद शि शिरेण जले नहि काखा सोई वात कसना रुची पीन सेयु॥ ई॥ अथ असा  
ध लछन॥ पूषा भम रण शपा वेहरि जे नी लपीत के॥ निष्टी वेछा सका सातो न जीवति ह



तःस्वरः॥ देव इति स्वासकासचिकित्सासंग्रहः॥ अथ हिक्काचिकित्सा दोहा॥ श्रुंठी हरडपीपरित  
 ष्ठाश्रुंठीपीपलिश्रुंठी॥ सिताक्षौद्राचूणा युतहिचकीरायैमंठि॥ ७०॥ इति दोईजोगकहेदोहा  
 जाइकोलीबहुलाकराणहैहैटेकप्रमान॥ मधुसोंगोलीगुंजसमहिक्काहोईहिरान॥ ७१॥ श्रुं  
 ठिछागकेदूधसोंएकयोगहैसिद्ध॥ नागरगुडसोंनासदेहिक्काहोईनखुद्ध॥ ७२॥ मादिक  
 विष्टास्तन्ययुतनासादेइहिकरोग॥ बीठअलक्तकवारिसोंदेईनासहैजोग॥ ७३॥ इतियोग  
 हैनाशकही॥ अथधूमपानदोहा॥ मनशिलहरडजुआवरपीसिहसगकरिजोग॥ मुख  
 सोंधूणीलोजीयैहिडकीनासैरोग॥ ७४॥ अथचूराणदोहा॥ भाडेगीअरुश्रुंठीसमउस्मवा  
 रिसोंपाई॥ हिक्कापंचप्रकारकीलेतशीघ्रमैंजाई॥ ७५॥ इति हिक्काचिकित्सा॥ अथस्वरभं  
 गचिकित्सादोहा॥ आलवेतसंघवकव्योसतितिडोकतालीस॥ तुगाक्षौरत्रिसुगंध



समं सूक्ष्ममजीरापीसि॥ ७६॥ वांधौ गुडमहिजो टिकापीने सस्वरक्षयाह॥ कफ अरु अरु चिप्रशस्त  
भानिचवकादिकयहहरेह॥ ७७॥ इति चवकादिगुटिका दोहा॥ धात्री हलद अजमोद चित्र  
क्षार चूर्ण समलेह॥ मधुघृत सौलेही करौ स्वरभंग नास करेह॥ ७८॥ कलितरु कुस्मासिंधु  
समलेहवारिसौ चूर्ण॥ जाहि रोग स्वरभंग कौ कहौ पंडिते पूर्ण॥ ७९॥ धात्री चूर्ण पीसि स  
मधेनु दूध सौ प्याई॥ कह्यो एह सिद्ध योगवर स्वरक्षय तत क्षण जई॥ ८०॥ इति स्वरभंग  
चिकित्सा॥ अथ अरोचक चिकित्सा दोहा॥ मरिच सौ फ अरु तित्तिंडी दाडिम दासमा  
न॥ जीरा दौद्रसिंता सहित रुचिकर दीपन जान॥ ८१॥ करहु लेहमधुमिरच समकफ  
अरोचक होई॥ आद्रकर स अरु सहत सम कहै द्वियोग सब कोई॥ ८२॥ कास स्वांस प्रति  
श्याय कफ अरु चि जाहि कफ मीत॥ आद्रक सैधा होइ मिलि भक्ष अरु चिको जीत॥ ८३॥



वातपित्तकफदोषभयशोकलोभअतिक्रोध॥मनविपरीतभोजनकरैगंधरूपसैबोध॥८३॥  
इत्युपातेअरुचीमहाताहिभूषमिटिजाई॥जवप्रसन्नमनहोईतवअशनचोगुताबाई  
८४॥इतिअरोचकचिकित्सा॥अथछर्दिउपद्रवदोहा॥काससासवैचित्तज्वरहिकात  
साहदोग॥अंधकारआवेनयनकहैउपद्रवलोग॥८५॥अथचिकित्सादोहा॥घृतसै  
धवचाटोपवनतीनलवणसंयुक्त॥अथवाअषण्णमेलिकैपननछर्दिहैमुक्त॥८६॥  
इतिपवनछर्दिकोतीनयोगकहैदोहा॥लाजमसरयवमुद्रकृतछर्दियैगुदेहि॥ताम  
हिमधुसोमेलिकैपित्तछर्दिकोलेहि॥८७॥वालाचंदनतगरवृषअरुमृगालसंयोग  
इकइकतंडुलजलसहितपाईदोइमहिभोग॥८८॥पांचयोगवमिपित्तकेकहैएह  
मनलाई॥पंडितऔसधसमजिकैकरैउपादेवनाई॥८९॥पित्तपपडाकायकरितामहि



सहस्रमिलाई और योगमधुहरंड लिह पित्त छर्दि मिटि जाई ॥ ८० ॥ त्रिफला नीच पटोल पत्रता-  
महिमे लिगि लोई ॥ काष्ठ दौ डमिलि पान करि छर्दि नाश पित्त होई ॥ ८१ ॥ इति पित्त छर्दि काय-  
अथ कफ छर्दि दोहा ॥ त्रिफला वाइ विडंग शुंठी दीजै मधुसौ चूर्ण ॥ मोथा शुंठी विडंग सम हरे  
जुकफ कौतर्ण ॥ ८२ ॥ चौपाई ॥ मन शिलपी पलि मरि च समान ॥ कैथनी रसौ चूरन सान ॥ बील  
मिलाई सहस्र सौ पाई छर्दि रोग छिन माहि पराई ॥ ८३ ॥ दोहा ॥ काकडा शुंठी मधुसहित अ-  
रुद्र सलभा जोग ॥ चाटौ चूर्ण मधुसहित कफ वमि जावै रोग ॥ ८४ ॥ गज के सरालाल वंग वे-  
रम ज्जधन मोलि ॥ चंदन लाजापीपनी फूल प्रियंगु समरे लि ॥ ८५ ॥ सिता चूर्ण मधुयुक्ति करि  
कहौ लोह कौ आन ॥ वात पित्त कफ छर्दि सव पीये होत हेरान ॥ ८६ ॥ इति एलाटिले ददोहा  
कवल बीज अराल चीला जा सिता लवंग ॥ मधुसौ चाटौ संग ए छर्दि रोग कौ भंग ॥ ८७ ॥ जी



रासोचरमरिचसमपीपलिअरुआसंगं॥ मधुसोलेहीचाटियेदुष्टछर्दिकोंवध॥ देय॥ मोरपि  
कीमसमकरिसहतेमेलिकेयाई॥ छर्दिहराणएजोगहेकहीचतुरमननाई॥ देय॥ इतिछर्दि  
चिकित्सा॥ अथतृष्णाचिकित्सादोहा॥ सप्तधातुअरुसरितजलतप्तजुकीजेवा॥ क  
हुकशीतलप्याइयेतृषावतृष्णाकोरेलि॥ १००॥ चौपाई॥ वडदाठीमदुलठीआन॥ पीलि  
कुटिकवलफलजान॥ मधुसंगगोलीमुखमैधरो॥ तृषादोषदुषधि॥ नमहिहरो॥ १॥ इतिमु  
खशोषतृषाकोऔषधीसमाप्ता॥ अथमूर्च्छाचिकित्सादोहा॥ खिन्नआर्दरेपीसिकेदाष  
मुनक्कामेलि॥ तामहिमेलेमुठिटंकमधुसोचाटोमेलि॥ २॥ कासस्वासमूर्च्छाअधिकइन  
सेहोवेनासकहीविशेषज्वरवीचमैकीनीमैपरकास॥ ३॥ इतिमूर्च्छा॥ अथदाहचिकित्सा  
दोहा॥ सहसवारघृतधोइयेशीतलजलमैमेष॥ यहैदाहकोअहैहाथचरणकोंले



प॥ ५॥ दोहा॥ कोजीसो वस्त्र भें इकरि राखौ हृदय मज्जारं॥ अथ वामस्वा अमसो च दिन लेपन धार॥ ६॥ दोहा॥  
बीजन की जैता डवृद्धरे भा की जैसे ज॥ शीतल जल अरु शीत घर मिटे दाह काते ज॥ ७॥ इति दाह चि  
कित्सा॥ अथ मदात्पय चिकित्सा दोहा॥ धनिया दाख कपित्थ भनि दाडिम अंबली आन॥ एते योग  
मद पान के मद हेतु जान॥ ८॥ अथ अपथ्य दोहा॥ धूम पान अरु स्वेद न स्प अंजनि घर्षण देत  
कहे अपथ्य ता वृत्त सब कहै गुणी जन सेत॥ ९॥ इति मदात्पय चिकित्सा॥ अथ उनमाद चिकित्सा  
अथ ब्राह्मी गुटिका उन्मादे दोहा॥ केशर लवंग ईला ईची तजत माल दल कूंड॥ चित्रा पीपली मरि  
च घन अज वाइन अरु मुंठ॥ १०॥ करहा ब्राह्मी जाई फल जावत्री शुभ आन॥ शेरवा होली ते जव ल  
गई केशर तह ठान॥ ११॥ चवक कुले जनमस्त की पुष्कर मूल मिलाई॥ और पीपली मूल सब  
औषध सम करि पाई॥ १२॥ टंकटे कले औषधी मग मदमा साचार॥ सभ सम दाख मलाई पैवर



वै०  
५५

दमानमुखधार ॥ १३ ॥ स्वेदअंगशीतांगभ्रममृगीमोहकोंदेह ॥ वातव्याधिउन्मादसर्ववद्दीवरास्त्री  
 एह ॥ १४ ॥ इतिमहद्वाहीगोलीदेहा ॥ कुंकुमकरहाजातिपत्रअथामसकीदेह ॥ अरुकुलज  
 नगंधत्रयकुंकुमादिकहीएह ॥ १५ ॥ चूराणपवनत्रिदोषकोंस्वेदमोहउन्माद ॥ मृगीमूकगर्वमद  
 चचनइनकीयहमयीद ॥ १६ ॥ इतिकुंकुमादिचूर्णआदेकेरसमादेण ॥ मृथमाहेइतैलचौपाई  
 चित्रकचंदनदोनेआन ॥ तगरहरिद्रायुग्मवसान ॥ कुलथवडेवारास्त्रीलोडै ॥ शालिपर्णीपृ  
 ष्ठीपर्णीदीजै ॥ १७ ॥ केटफलत्रिफलापुष्करमूलगुंजावासाएरंडचूल ॥ आसमंधयवगोक्षुर  
 माष औरसारिवादशमूलजुभाष ॥ १८ ॥ चवलसुपारीचलदलआनै ॥ अलसौ औरव  
 रहटीजानै ॥ एलुवालुशितवारिदेह ॥ इटसटजडसुहोजनानेह ॥ १९ ॥ एरंडदोनेलालस  
 पेद ॥ ताकीजडमेंलहरामभेति ॥ शणकवीडैचीरुदेवदार ॥ अपमार्गतिलश्यामजुडार

रामः  
५५



पारसपीपली सुभ्रसमभाई ॥ ए औषधसंस्कृतकराये ॥ तिलकातेल ॥ त्रिगुणलीजे ॥ तैमहि औ  
षधकल्कादीजे ॥ २१ ॥ सेद अगनिसों तेल पचाई ॥ तामें औषध और रलाई ॥ पीसि छाणि कै डार  
एह ॥ कहौ नाम औषधकालेह ॥ २२ ॥ छुड धनीया अरु केशर मेले ॥ सो पाक दुकी दाडि भमेले ॥ लवेग  
मजीठ दाल चीनी लीजे ॥ अगर से भालु पत्र जु लीजे ॥ २३ ॥ मालती केतकी जाई फूल ॥ अरु तुलसी  
महलठी तूल ॥ सुठी भंगारामेलिक चूर ॥ बीज से भालु गठवनि पूर ॥ २४ ॥ एव छली रइ द्रव्य वले  
ह ॥ तजइ लाई बीजाइ फल देह ॥ वसु सुगेध वरावर लीजे ॥ षट् गुणतत्र औषध से दीजे ॥ २५ ॥ ते  
ल मध्य औषध संवठावह ॥ भली भोतिसो माहि पचावह ॥ जब निफेन निरमल तव होई ॥ जई न  
ते रोग को बोई ॥ २६ ॥ दैत्य दुष्ट ग्रह निवर्तन जास ॥ मज्जन कि ये राजा वसतास ॥ अति विशेष  
यवल कर्त्ता होई ॥ काम प्रसन्न अति वल्लभ जोई ॥ २७ ॥ प्रेत पिशाच राक्षस अरु भूत ॥ डाकनि



शाकनी एही दूत ॥ बेंजपंगु अर्दित बेंठ जान ॥ भ्रममदजडता मिरगी आन ॥ रण ॥ कर्ण नासिका शिर का  
 रोग ॥ अर्श प्रदत्राण नाडी योग ॥ शोफ गल ग्रह छूटी संधि ॥ अस्थि संधि भागै को बंधि ॥ २२ ॥ स्मृति  
 मेधा अरु देही जोर ॥ सुंदर रूप पलित नहिं वोर ॥ भूत प्रेत सब वसवै जाय ॥ नील वंग यव रण न  
 साय ॥ ३९ ॥ कह्यो वैद्य रसायन एह ॥ रोग जानि कै मर्दन देह ॥ यह माहेंद्र अमृत है ते ल ॥ अखिन  
 कही वचन की ये ल ॥ ३१ ॥ इति माहेंद्र ते ल ॥ अथ अमर सुंदरि गुटिका दीहा ॥ त्रिफला त्रिकुटा  
 रणुका चित्रक पीपरि मूल ॥ चातुरजात कलोह मृत अकर करा समतल ॥ गंधक पारद विषज  
 ल दत्तामहि वाई विडंग ॥ सब औषध ते द्विगुण गुड मेलहु इन के संग ॥ ३३ ॥ चूर्न को मान गो  
 ली करै अमर सुंदरी नाम ॥ श्वास कास सन्निपात सब शीत वात के काम ॥ ३४ ॥ अपस्मार उन्मा  
 द गद और गुंदा मय रोग ॥ पेदित कक्षौ विषा रै के इन कोषावण डे ॥ ३५ ॥ इति अमर सुंद



रीरसगोली॥ इति उन्मादचिकित्सा॥ अथ अपस्मारचिकित्सा दोहा॥ अतपित्तकफसन्नेपात  
एईचारप्रधान॥ जाकी संज्ञानाशकै सो मिरगी यह जान॥ ३६॥ पंचकोलसैं धवमरिच अरु वि  
डंग विडलौन॥ धान्य जवनी जीरलै पपलि त्रिफला सौन॥ ३७॥ करंज बीज वाछाल सलसूत  
मचूर एह॥ तमनी रसो पीजी ये वात फ्लेख हरिलेह॥ ३८॥ अपस्मार उन्माद अर्श ग्रहणी गद  
को जान॥ दीपन भूषजुन रुको क ह्यो कल्पान जु आन॥ ३९॥ इति कल्पान कचूर॥ अथ कायः  
ब्राह्मी श्रुंठी किरा इता पुष्कर मूल कचूर॥ दारु हलद सुरदा रूच च मोथा पीपलि मूल॥ ४०॥ अ  
भया कुठ सरे सज डकर हु काय यह आनि॥ मृगी रोग उन्माद कफ रोग विसर्वाहान॥ ४१॥ इति  
काय॥ अथ नाश दोहा॥ सेहें डमा हे मरिच धरिरा यो दिन इक ईश॥ नाश जु दीजे वारि सौ शी  
घ्र मृगी को सीस॥ ४२॥ लशुन हिंगु अरु व्यास समजीरा कुठ मिलाई॥ शिगु शिला वछमत्र



वै०  
५७

शृतकरहुतैलमनभाई॥४३॥नावनदीजेनासिकाचतुरहायसुंदेह॥मृगीरोगकोएकहोशी  
प्ररोगहरलेह॥४४॥इतिमृगीरोगचिकित्सासमाप्ता॥अथक्रमणिकादोहा॥अतीसारग्रहण  
अरसअगनिमोयहेजान॥कहीअजीरणविसूचीकाकृमिपोडुवषान॥४५॥कमलदोषअ  
रुक्तपित्तक्षयीकासअरुस्वास॥हिक्कास्वरभंगजानियैऔरअरोचकभास॥४६॥छर्दित  
थाअरुमूर्छनादाहमदात्पयपाई॥भूतप्रेतउन्मादक्रममृगीरोगपुनिभाई॥४७॥पनरहकी  
नेएकठत्ततीयखंडमेंआन॥औषधकीजहचूकहेतहांसुधारौजान॥४८॥इतिश्रीवाचना  
चार्यश्रीसुमतिमेरुगणितछिष्यमुनिमानजीखरतरगछीयकृतभाषावैद्यविनोदनाम  
निदानचिकित्सासंक्षेपसमाप्तात्ततीयखंडः॥३॥अथवातव्याधिनिदानप्रारभ्यतेदोहा॥  
तियप्रसंगशीताल्पलघुक्षयाप्रजागरकास॥रक्तमोक्षलेपनझलनचलनपंथव्यापान

रामः  
५७



मर्मघात अतिशोकगजयान अश्वकापोत ॥ धर्मसंधारन आमगदधात ॥ १ ॥ अभिघात ॥ २ ॥ क-  
रैविषम उपचारनर अरुचिंता उपवास ॥ दुष्टहोई रेचन वमन ततैपवन प्रकास ॥ ३ ॥ देहसो-  
त जहरिक्त भनित हो पूरि पवमान ॥ सर्व अंग एको गले करै व्याधित ह आन ॥ ४ ॥ बहुरि वाय-  
संकोच तन अस्थि पर्व च पुभंग ॥ पाणि पृष्ठ शिर को अहै रोम हर्ष भनि अंग ॥ ५ ॥ खंज ककुपो-  
त्प भ्रम मोह सुप्ता गात ॥ नाश शुक्र रज गर्भ पुनि करै दीण सवधात ॥ ६ ॥ अंग शोष नासान-  
यन अश ग्रीव शिर भेद ॥ अर्त्ति तोद आक्षेप तन देह के पभनि षेद ॥ ७ ॥ लछन वाय प्रकोप ॥  
यह करै बहु तपर लाप ॥ हेतु स्थान विशेष ते होई वात तन आय ॥ ८ ॥ एल छन सव जाकि-  
करहु चिकित्सा जोई ॥ गुरो पदिष्टु सै जो रचै सो नर नीका होई ॥ ९ ॥ अथ चिकित्सा दोहा ॥ पल-  
इक अथवा आध पल लशुन कूटि कै राख ॥ औषध यामै मेलि कै कहनाम अवभाष ॥ १० ॥ सो



वै०  
५८

चरसैंधाजराहिंगुत्रिकुट्यसमकरिमेलि॥ माषमानभक्षनकरैएरंडप्रजजनभेलि॥ ११॥ कद्वै  
एहअनुपाननरमासएकनित्तवाई॥ वातरोगअरुवकमुखअरुअपतत्रिकजाई॥ १२॥ आ  
धअंगअरुअंगसवऊरुसंभकटिपृष्ठि॥ जठरगुधिकमिदोषकोहरैरोगएदुष्ट॥ १३॥ इति को  
नपिंडदोहा॥ लशुनकूटिसूक्ष्मकरहघृतसोंषावैमेलि॥ भोजनकीजैसरसघृतवातरोग  
कोरेलि॥ १४॥ देवदारुनागरवचाजलसोंपीवैचूर्ण॥ हृदैवातकीवेदनाचाणमेंनासेपूर्ण॥ १५॥  
शुंठीचित्रकजैलैसहितकुक्षिवातकोषोई॥ कुटजबीजलेप्रातसमकुक्षिवातनहिहोई  
इतिकुक्षिवातकोदोइदोईजोगकहे॥ आसगंधतिलश्यामशुंठीसमखेडमेलंहआन  
घृतसोंलेहरलाईकेवातव्याधिकीहान॥ १७॥ अथचूरनदोहा॥ पीपलिविजाशुंठीसमच  
वककैलौजीपाई॥ अजवाइनजडपीपलीआसगंधदेहरलाई॥ १८॥ अकरकराविडे

रामः  
५८



गसमगुडसोंगोलीयाई। टेक एक परमानकी असीवातसवजाई। १९। मुंडी भंगरा भंगसम-  
मेलिसंमालुआन। चूरनदीजैटेकदुईवातव्याधिकीहान। २०। इतिवायको चूर्ण अथकाय  
दोहा। एरंडविश्वारासनादेवदारुगिलोई। कायजुकरिकेपीजीयेपीडावायनहोई। २१। ल  
दु अमनकूटिगो धूसंकरहुदीरमनलाई। हाडपीड अंगकडहिशीतवातनरहाई। २२। अ  
थतेलकायको दोहा। तेलतिलोंकासेरइक अरुधतूररसमेलि। बीजधतूरगुंजाजहर  
टेकपंचयहभेलि। २३। करहुतेलविधिसोंचतुरअरुनिफेनवैजाई। ताकोमर्दनकी  
जीयेवातरोगनरहाई। २४। अथत्रयोदशोगगुग्गुलुदोहा। आसंगंधकीकरिहपुष्प  
लासोंफगिलोई। भसडाशटीशतावरी अरुनिशीतसमहोई। २५। अंगीजवाईनाएकसम  
तामैगुग्गुलुदेई। घृतसोंगोलीकीजीयेअनुपानसोंलेई। २६। यूषमद्यकोसंजलदूध



गाईकाहोई॥ अनूपानसवाकहेचठेहजोकोई॥ २७॥ कटिग्रहगुध्रसिवाहृष्टहृष्टनयहजा  
नूपाई॥ संधिअस्थिकोंवाइग्रहमज्जसायुगतजाइ॥ २८॥ कोठवातकरुद्धदुखहृष्टरोगद्वै  
जास॥ खजवातअरुहाडभंगइतेरोगकानाश॥ २९॥ त्रयोदशोगगुगुलकह्योचतुरपेदिता  
ह॥ रहैपण्यत्रयमसकलतवषाणोंकोदेह॥ ३०॥ इतित्रयोदशोगगुगुलुवातविकारे॥ अथ  
नारायणतैलकवित्त॥ ३१॥ पाटलाकेंडारीस्थूलभूतवृक्षअग्निमंथशालिपर्णीपीठप  
र्णीपारिभद्रसानिये॥ राजवलाअश्वगंधाक्षरकअरणीविल्वऔरवलाअतिवलानौतनवषा  
निये॥ दशपलभिन्नभिन्नकरिलीजैएकठौरचारडोणजलवीचकाथद्रव्यनिये॥ रहैज  
वाकडोणअगनीउत्तारिराखौप्रातहीनिकालिकरिदृढवस्त्रनिये॥ ३२॥ पुनःकवित्तअ  
तामैमैचौचारप्रस्थतिलहूकातेललेहसिक्ताचुरिकौरससमस्नेहमैधरीघीये॥ औरहेमि



लाई दूध धेनु अजादीर कहै चौगुनार नाष्टे लण के ठौर की जीये ॥ तमैं दी जै द्वे द्वे पल औ ॥  
षधी सवारिक लक चतुर सुधारि वैद्य विधि सों पची जीये ॥ डारिये जु डव्य दश घट हं कौनो स  
सुनो और हं सुगंध भेलि तैल मांही दी जीये ॥ ३२ ॥ पुनः कवित्त ३१ ॥ राइ सेन आस गंध देव दा  
रुश संपुष्पा जे दन तगर छुड शुद्ध कै डलाइ देह ॥ माष पर्णी मुद्र पर्णी शालि पर्णी और हे छ  
ली रा भेलि सुगंधिर लाइ दे ॥ धरोवी चं संधालून इट सटने जमान मोलमी वर चडाली  
दावी सार लाइ दे ॥ सिद्ध भयो तैल जव जल वीच शोषि गयो तव ही उता रिभ मि देह कौ मला  
इ दे ॥ ३३ ॥ पुनः कवित्त ३१ ॥ अधो भाग वात कोप मध्यगत शीश रोग मन्या स्तंभ हनु सं  
गल ग्रह दोष है ॥ वधिर वृषाण शोथ अत्र वृद्ध रुद्र रोग नष्ट शुक्र क्षीण ज्वर ताहि नर पो  
ष है ॥ देत रोग मंद बुद्धि अर्द्धित पवन गदितिय जो न गर्भ धरै ताहि कौ संशय है ॥ वाय से



तीभग्नहयनरदेहवातदुखी औररोगकहोंसबइनसोंनरोषहै॥३५॥ पुनः अविन्न ३५ स्वास  
 भ्रमरक्तपित्तदंतशूलकृमिरोगसूर्योवर्तेदाहगदअक्षिशूलपरैहै॥ सधिगंततअस्थि  
 मज्जाअंगकेपुपक्षधातकटिपीठमृगीरोगसबनिसोंनरहै॥ क्षयीशोषउनमादमेदभ्रम  
 जाकीअतिपेटहीमेंसबअन्नशीघ्रमोंदीजरैहै॥ एइहैप्रभावयामेंसमाजचतुरदेहका  
 मरूपकरैएहएइरोगहरैहै॥३५॥ दोहा॥ यहकहीयेनारायणीतैलमहावलवैत॥ मर्दनही  
 तेहोईशुभकहैगुनीजनसंत॥३६॥ इतिनारायणीतैल॥ अथविसर्गर्भतैलदोहा॥ वचा  
 कुठशतावरीपुष्करलशुनविडंग॥ देवदारुअजमोदविषदशमूलमेल्हसंग॥३७॥  
 आसंगधअजमोदशिग्रुशुंठीहलदणिलोई॥ सेभालजडवानरीहरदसौफहुहुदे  
 ३८॥ सोएपीपलीमूलसमअरुप्रसारनीआन॥ राइसेनपाठामरिचवलाविशालज



डजान ॥ ३८ ॥ पलपलली जै औषधी पाई नौ गुनानीर ॥ मंद अगनि सों काय करिले हरा  
ण वसुधीर ॥ ४० ॥ तामहि मेनौ तैल प्रस्थ प्रस्थ लेहु एरंड ॥ सरसौ भंगुर अर्करस प्रस्थ अ  
स्थ लेवेड ॥ ४१ ॥ तामहि गोमय सरस पल विषदी जै बीच ॥ निरमल अरु निःफेन हु  
ईराषही वासन सीच ॥ ४२ ॥ मर्दन करी ये दोष जहवात रोग संधि वाई ॥ कटि त्रिकपीडा  
पीठ ग्रह प्रदाघात सव जाई ॥ ४३ ॥ अंग के पदा रूपा कुवल अरु होवै अर्द्धग ॥ धनुष वात  
अरु गंध्रसी सन्निपात कहि संग ॥ ४४ ॥ नाम राशि शशी जोग शुभ तामहि मर्दन तैल ॥  
नाम धरौ विसगर्भ एपवन चौरा शरीर ल ॥ ४५ ॥ इति विसगर्भ तैल ॥ अथ वात स्वेद दोहा  
कुठ पुह करदारु श्रुंठी शत पुष्पा एरंड ॥ आभाते जवती त्रिकदुरा इमेन लेमंड ॥ ४६ ॥ आ  
सगंध इट सट जटा ग्रथिक भारी लेह ॥ अथ पलली जै औषधी लादी आठ कदेह ॥ ४७ ॥



वे०  
६१

अगनियोगमूर्च्छितकरैतामैं औषधमेनि॥ ताकौ करियै सेदत न अशीवायफोरेलि॥ ४८॥ वा  
हपृष्ठशिरकटिग्रहणपक्षाघात अपतान॥ मन्यासंभ अर्हितसकलगृध्रसेदहेजान॥ ४९॥  
इतिलाक्षादिसेदः॥ अथपंचवायसेदकथनदोहा॥ धरैजुवायशरीरकौ आयुवर्णवहप्रा  
ण॥ तात्तैवायुजगमैं प्रभुकहैंसभे सुरक्षान॥ ५०॥ अथपंचवायनामकथनदोहा॥ प्राणोदा  
नसमानपुनिव्यानअपानहैपंच॥ स्थानकहेजुविचारिकछुसमजिपरैजुरंच॥ ५१॥ कंठ  
जीभअरुनासिकाउदानवायकास्थान॥ सेदअंनुनाडीचलैकरैकर्मयहजान॥ ५२॥ द  
धाचपलअरुप्रवलवलनकरैवायसामान॥ व्यापकदेहीशीघ्रगतिकहैबाहि कौवा  
न॥ ५३॥ अंगचालअरुनासाजुउरमसकस्थानहैप्राण॥ स्वासआहारउदागारकर्म  
वनदोषप्रमाण॥ ५४॥ कंठजीभअरुहाथमुखअक्षिकर्मजेहोई॥ संकोचप्रसारण॥

रामः  
६१



मानके यहै कर्म कहि जो ई॥ ५५॥ वृषाणवस्ति अरु मेरु उर गुदानाभि अस्थान॥ सूत्र सूत्र॥  
मलप्रवतिण करै कर्म कहि जान॥ ५६॥ जहो जहो पीडा रहै तहो तहो देह स्थान॥ ताको देख॥  
रिये नाम यह करीये ताको ज्ञान॥ ५७॥ इति पंचवायस्थान कहे॥ श्लोकः॥ अभ्यंग स्नेह सेव  
द्यैर्वातलोयो नशाम्यति॥ विकारस्तत्र विज्ञेयो दुष्टमात्रास्ति शोणितमिति॥ ५८॥ उक्तं च सुश्रु  
ते॥ इति वातवाधिचिकित्सा॥ अथ अर्दितचिकित्सा दोहा॥ कल्क जु कीजै लशुन कौताम  
हि मे लोत्तेल॥ परभाते भक्षण करौ तुरत तमासाषेल॥ ५९॥ अथ गृध्रसीचिकित्सा दोहा॥ व  
डे नीव कामूल ले जल सौपी वैपीसि॥ दाह्या जावै गृध्रसी दिन मरया दावीस॥ ६०॥ इति  
गृध्रसीचिकित्सा॥ अथ वातरक्तनिदान कथन दोहा॥ स्निग्ध आम्ल कटु क्षार पदु उ  
ष्ण अजीर्ण बाई॥ सटित मोस जषत क्रदधि माष सुरास वभाई॥ ६१॥ जो रात्रि निद्रादि



वै०  
६२

वसविरुद्धाध्यसनीहोई॥पलनइच्छुशाकादिसवकुलतयमोठपुनिजोरी॥६२॥स्यलसुव  
सुकुमारसवमिष्णाहारविहार॥कोपकरैशोणितपवनऔरशुक्तिआरनाल॥६३॥इतिनि  
दानं॥अथचिकित्सादोहा॥रसगिलोईअथचूर्णकरिअथवाकीजेकाय॥सेवेदिनइक  
बीसतकहोईपथ्यजोसाथ॥६४॥अथमंजिष्टादिकायः॥दोहा॥कइहलददेवदास्वचत्रि  
फलानीवमंजीठ॥छिन्नरुहामहिमेनियेकरिकाठागुरुदीठ॥६५॥वातरक्तमंडलरक्तपा  
मकुक्षुनेत्ररोग॥मंजिष्टादिककायलघुअरुकपालिकाजोग॥६६॥इतिलघुमंजिष्टादि॥अ  
थवृद्धिमंजिष्टादिकायः॥दोहा॥मोथगिलोईमंजीठवचनीवनिशादयआम॥अंगुठीकुठ  
त्रिफलाकुटजपीपलिवित्रकजान॥६७॥वासाभार्गीइंद्रयवमूर्वाकइविडंग॥विजैसा  
रचेदततिवीपटोलपत्रदेसंग॥६८॥भैरवराजसितावरीवृद्धदास्राहिमान॥पायवाकु

रामः  
६२



चिसारिवावरुणकरंजवषान॥ ६८॥ आमलतासंपत्तीसेजसुपित्तपापडामेलि॥ औरजवषान  
सजडकृतमालकसमभेलि॥ ७०॥ पीपलिआरकिराइतापारिभद्रअषरोटे॥ एतेओषधएव  
मकरहकायकाजोट॥ ७१॥ प्रतीवासगुग्गुलुकणपीवहुसाथरलाई॥ देहुअठारहकोठकोव  
तरकतमिटिजाई॥ ७२॥ मेददोषश्लीषदचरणउपदेशपक्षाघात॥ नेत्ररोगकोशस्तहेवृ  
द्धमंजिष्ठायात॥ ७३॥ इतिवृद्धमंजिष्ठादिकायः चोपाई॥ वासाअरतूअवरगिलोई॥ तीनो  
समकरिकाठाहोई॥ एरंडतेलसेगप्रातहिवाई॥ वातरक्तसमतनकोजाई॥ ७४॥ इतिवा  
तरक्तचिकित्सा॥ अथऊरुस्तंभचिकित्सादेहा॥ देवदारुएरंडशुठीरास्नामेलिगिलोई  
कायअस्थिसर्वांगसंधिराखापंचकहोई॥ ७५॥ एरंडभषडारासनादेवदारुगिलोई॥ आ  
मलतासपुनर्नवाएतेसप्तकहोई॥ ७६॥ कायदेहुनागरयुगतजेघपाश्र्वेजिकआन॥ वस्ति



वै०  
६३

मूल अरु ऊरु यह न रासना सप्तक जानें ॥ ७७ ॥ इति ऊरु सभं चिकित्सा ॥ अथ आमवात चिकि  
त्सा ॥ अथ अजमोदादि चूर्णौ चोपाई ॥ मरिचं पीपली वा इविडंग ॥ देवदारु अजमोद निसंज  
चित्रक सेंधा पीपली मूल ॥ शोफर लाई करो समतल ॥ ७८ ॥ कहे जु औषध न वपल लीजै ॥  
तामैं श्रुंठी जु दशपल दीजै ॥ देह विधारा दशपल आन ॥ वडी हरड दशपल जु मान ॥ ७९ ॥ पंच  
वाई रोग दारुण जो होई ॥ ताको दूरि करै पुनिसोई ॥ कटि अरु वस्ति गुदा वह फूटे ॥ जंघ अ  
स्थि वह धा पुनि दूटे ॥ ८० ॥ आमवात मिलि संधी सुजानौ ॥ वह तशोज पुनि अंग वसानौ ॥ च  
रण अथ वा गुटिका कीजै ॥ नाम एह अजमोदादि कहीजै ॥ ८१ ॥ इति अजमोदादि चूर्णो दो  
हा ॥ हिं गुच वक विड श्रुं ठिकाण जीरा पुन कर मूल ॥ भागोत्तर चूरण करौ आमवात को व  
र ॥ ८२ ॥ श्रुंठी के ड्यारी पापरै पाठ अभया चित्र ॥ गज पीपली मोथा ऊरण पीपली जवु भलि

पंच

राम  
६३



मित्र ॥ ८३ ॥ ए औषध समं पीसि कैत स नोर गोलें ह ॥ आम वात की वेदना सो सीधो सिरे ह ॥ ८४ ॥  
जाको रुचि नहि अन्न की ताको भूष करे ॥ जाके पीडा पेट महिता को तुरंत हरे ॥ ८५ ॥ इति आ  
म वात को चूर्ण दोहा ॥ हर डै झुठी विडंग सम देवदारु मधि आन ॥ तप्तोदक सो पी जीये आम  
वात को हान ॥ ८६ ॥ ए रंडति वीपती स समदारु निशाजु विडंग ॥ मरिच इंद्रिय व आनि कै राषो  
सब सम संग ॥ ८७ ॥ चूर्ण पी जै उष्ण जल आम वात दै जाय ॥ कृमि की पीडा उदर दुख होई  
इ न्हे का नाश ॥ ८८ ॥ इति आम वात चूर्ण दोहा ॥ गुग्गुलु हरड गिलोई सम निशादाल ई  
ट साट ॥ धेनु मूत्र सो काय देय है शो ज को काट ॥ ८९ ॥ इति आम वात को काय ॥ अथ योग  
राज गुग्गुलु कथने चौपाई ॥ चित्रक पीपली मूल जवानी ॥ शौफ विडंग अज मोद जवानी  
जीरक गोक्षुर धनीया आनौ ॥ देवदारु अरु चवक वषानी ॥ ९० ॥ त्रिफला मथारा स्नाती जै



वे ७  
६४

सैंधवाणलाहठमहिदीजै॥तालीसत्रिकुटोअरुदालचीनी॥तमालपत्रयवायारमहिदीनी॥  
ओषधपीसिचूर्णसमकीजै॥तामैगुग्गुलुवरारवरदीजै॥घृतसोंकूटोदिनदोइचार॥स्त्रि॥  
गधभांडमैरायौधार॥८२॥वलेदेयीनैमात्रादेहु॥यथाहारयावोनराह॥आमवातअरुपव  
नचौरासी॥त्राणकृमिकुष्टअरुसकौनासी॥८३॥उदरआनाहगुल्मकौठेलै॥दीप्तिअगोनि  
कौजोरैमेलै॥तेजवृद्धिवलजाकौहोई॥संधिमज्जकावायसवषोई॥८४॥वायरोगकाएहै  
काम॥धस्योयोगराजानाम॥इनरोगनकोअमृतहैएह॥रोगविचारिकरैतवदेह॥८५॥  
इतियोगराजगुग्गुलु॥इतिआमवातचिकित्सासमाप्ता॥अथप्लूतकाराणकथनदोहा  
शीतलजलअतिपानतैमैपुनअतिअभिघात॥पानप्रजागरहास्यअतिवायरोधवपुव  
त॥८६॥संधारणविटमूत्रभानिपुकरोधउपवास॥अन्नविरुद्धपुष्कशा॥पुनिअहंवि

अमः  
६४



रूठ यह भास ॥ ८७ ॥ कोरदूष आठ के मटर हिंदल मंग के हिले ॥ पठे पाठ अशिरोक चित्त ॥  
गा कसे लो होई ॥ ८८ ॥ इन ते वाय प्रकोप बहु करे शूल नर जास ॥ स्निग्ध डेस भोजन विमल  
मर्दन सेव विनाश ॥ ८९ ॥ इति शूल निदाने ॥ अथ चिकित्सा दोहा ॥ सोचर पुष्कर श्रुंठ हिं गु  
सम करि जोग मिलाई ॥ पीसि पीये जल तप्त सो शूल विसृची जाई ॥ ९० ॥ अथ रस जर्षात दो  
श्रुंठ हिं गु जीराम रिचता महि वरच मिलाई ॥ तप्तोदक सो पी जीये पेट शूल न सि जाई ॥ ९१ ॥ अ  
थ वैद्य जीवने दोहा ॥ श्रुंठ जु लीजे पंच टेक काण मे लि सत टेक ॥ चार टेक अज मोद पुमि  
हे अज वाइन अंक ॥ २ ॥ ता में सोचर टेक इक सब सम हर सु मिलाई ॥ पेट अफारा शूल गु  
ल्म आम वात मिटि जाई ॥ ३ ॥ अथ हिं ग्वाष्टक चूरण दोहा ॥ श्रुंठ हिं गु संधाम रिच पी परि जी  
र दोई ॥ अज मोदा जल तप्त सो कवही शूल न होई ॥ ४ ॥ सोचर ति वी हरीत की पी परि श्रुंठी स



मान ॥ तप्तोदकसोपीजीयेनाशशूलकाजान ॥ ५ ॥ सज्जीपीपरिमरिचंमुठिसंभकरिताहिमिला  
ई ॥ जलसोपीजीपीसिकरतुरतशूलमिटजाई ॥ ६ ॥ शोषचूनसंधामरिचंमुठीहिंगुसममेति  
पीपलिचूरनतप्तजलत्रिदोषशूलकोरेलि ॥ ७ ॥ तीनलवनयववारहिंगुअभयातामहिच  
रा ॥ वाइविडेगजवाइनीतुवरूपकरमूल ॥ ८ ॥ औषधसमलोजीयेटेकटेकपरमान ॥ ९ ॥  
वीलीजेटेकत्रयचूरनकरीयेजान ॥ १० ॥ तप्तनीरसोपीजीयेटेकदोईपरमान ॥ आमवातआ  
ध्मानगदशूलगुल्मकफहान ॥ ११ ॥ इतितुंवरादिचूरण ॥ सोरठा ॥ संधाहिंगुशिलाई ॥ उष्म  
जलसोशूलहर ॥ सोचरसोहिंगुबाइ ॥ दोइजोगकहिशूलके ॥ १२ ॥ अथलेपदोहा ॥ लवण  
कल्मरीकौडसममुखवरवायविडेग ॥ औरकपीलामैणफलसवचूरनकरिसंग ॥ १३ ॥ ना  
भिहेठजललेपदेकरीएकद्वैवार ॥ पेटअफाराशूलगदमूत्रवेधकोटा ॥ १४ ॥ इतिशूल



लेप॥ इति शूलचिकित्सासमाप्ता॥ अथ उदावर्तचिकित्सा दोहा॥ विकटादंतीतिसमचित्रक  
पीपलिमूल॥ गुडसोंगोलीवांधीयेमुखमेंमेनोपूर॥ १४॥ अगनिवठावनवलकरशेषोपुदाव  
र्तरोग॥ एहगुडाएकनामकहीउत्तमकहियेजोग॥ १५॥ इतिगुडाएकउदावर्तको॥ इतिउदाव  
र्तचिकित्सा॥ अथ अनाहचिकित्सा दोहा॥ वचाहिंगुजाजीहरडकुठपुहकरसुनं॥ वाइवि  
देगनागरयथाउत्तरोत्तरपूर॥ १६॥ पेटअफारागुल्मसीहउदावर्तआनाह॥ औरविसुवीरो  
गहेकहैअवेहमजाह॥ १७॥ इतिआनाहचिकित्सा॥ अथगुल्मस्यानपंचकथनदोहा॥ स्या  
नपंचरुदिनाभित्रयहृदयनाभिमध्यभाग॥ पंचमकहियेपार्श्वग्रंथिरूपगुल्मकहिमाग॥ १८॥  
अथकारणदोहा॥ रुद्धअन्नअभिघातपुष्कमलदायनिग्रहवेग॥ पानविषममात्राअधिक  
अनलगुल्मउद्देग॥ १९॥ अथगुल्मचिकित्सादोहा॥ यवाघारसैधवहरडअजवाइनवचमे



वै  
६६

लि॥ आमलवेतसहिं गुसम॥ चूरनकीजे मेहि॥ २०॥ तमनीरसों पीजीये गुल्म प्रूल है जास॥ इति  
कर जानो चूरन यह करै रोग का नाश॥ २१॥ इति वचादि चूर्ण॥ अथ द्वारविधि गुल्म प्रूल को चो  
पाई॥ अरणी कूठ कंडारी दोई॥ लौन अवाग चित्रक होई॥ आक भिलाव के सुवेले॥ सेहें डंभी व  
वकायन मेले॥ २२॥ वासा पाडल पुष्कर मूल॥ बाल सुहां जन मे लोतल॥ सवै जो लाइ राख करे  
ह॥ पाइ सुनीर चुवाव हाह॥ २३॥ ही गर लाई बाखों पाई॥ गुल्म उदर दुख पी हा जाई॥ कह्यो  
योग शांता ह विचार॥ कीजे औषध पर उपकार॥ २४॥ इति द्वार पुन॥ चोपाई॥ सैधा त्रिकटा  
चवक विहाल॥ करे जपात चित्रक सम घाल॥ सव ज लाई मठा संग पाई॥ गुल्म उदर भूष  
प्रूल न साई॥ २५॥ इति गुल्म प्रवास पोडु रोग को द्वार॥ अथ चूरन चोपाई॥ जीरा सैधाई संपेद  
बीज॥ चूरन कर के टंक इक लीज॥ तक्रमिलाई सकारे पाई॥ गुल्म राग वहन फा जाई॥ २६॥

चोहर

गमः  
६६



इतिगुल्मचिकित्सा॥ अथेहद्रोगचिकित्साश्लोकः॥ अतुष्मगुर्व्यम्लकषाहृतिक्तश्रमाभि-  
घाताध्यशनप्रसंगैः॥ संचितैर्तेर्वगविधारणैश्चहृदामयःपंचविधःप्रदिष्टः॥ २१॥ अथचि-  
कित्सादोहा॥ पीपलिमूलईलाईचीघृतसोर्षोवैचूर्ण॥ हृदयरोगअरुगुल्मदुष्मनाशहो-  
इयहर्तुर्ण॥ २२॥ कुंकुमगेहूछागपयगोघृतकरिष्यपक्क॥ शितासहिजोमाईसोहृदैरहै-  
नकोसक॥ २३॥ श्लोकः॥ नागरेणिवेदुस्मंकषायंचाग्निवर्द्धने॥ कासश्वासानिलहरंश्च-  
लहृद्रोगनाशन॥ २४॥ अंठीजवानीलशुनेहरीतकीकुष्ठचकुस्तुवरुश्चुक्कमाद्रिकं॥ सो-  
वीरशुक्लमधुवाराणीरसःकस्तूरिकाचंदनकंप्रयानकं॥ तंबूलमप्येषगाणःसखाभवे-  
न्मत्तस्यहृद्रोगनिषीदितात्मनः॥ २५॥ इतिहृद्रोगचिकित्सा॥ अथमूत्रकृच्छ्रहेतुकष-  
नंदोहा॥ तीक्ष्णशौषधरूक्षश्रमनृत्पृष्टदुत्थान॥ होतअजीर्णअरुअध्यसनम



वै.  
६७

त्स्य रूपमद्यपान ॥ ३३ ॥ मूत्रकृच्छ्रकाहेतु यह अरु कोपै मलतीन ॥ मूत्रमार्ग बाडो अधिक दे  
ह होत है दीन ॥ ३४ ॥ वस्ति मेरु बदाण सरु के स्वल्प मूत्र वह वात ॥ रक्त दाह कृच्छ्र पीत रुज  
पित्त कृच्छ्र मुहु जात ॥ ३५ ॥ वस्ति लिंग गुरु शोथ रुज मूत्र कृच्छ्र कफ होई ॥ सर्व रूप सन्नि  
पात के अधिक कृच्छ्र है सोई ॥ ३६ ॥ इति मूत्रकृच्छ्र निदाने ॥ अथ मूत्रघात कथन दोहा  
मूत्रघात ते रह विषम दोष तीन सै जान ॥ वात के डली आदि दे जानि लेहु सुरगपान ॥ ३७ ॥ लछ  
न माधव मैं कहैत हो देखि कै लेहु ॥ कं ह्यो न जाई विस्तर ईता हो वठै ग्रंथ का देहु ॥ ३८ ॥ अथ  
पथरी लछ न दोहा ॥ वात पित्त कफ शुक्र भनि प्राय श्लेष्म अधिकार ॥ उपमा यम है अस्म  
री औषध ताहि विचार ॥ ३९ ॥ इति निदाने अथ चिकित्सा दोहा ॥ अस्म भेद शमा कदम्ब का  
स गोष रुयाम ॥ मधु संग वाटौ अशमरी मूत्रकृच्छ्र का नाश ॥ ४० ॥ नागर धात्री ॥ भर आसरी

रामः  
६७



धगिलोई वातरोगकोंबोयाभूत्रकृच्छ्रकोंबोई॥४१॥ इति अमृतादिकायः दोहा॥ किरमाला  
गोदुरहरडदृषदभेदधन्वयास॥ माहिकसेतीकायदेदाहकृच्छ्रवेधनाश॥४२॥ इति पित्त।  
मूत्रकृच्छ्रकायः दोहा॥ शित्तादायकाकल्ककरिषाईकृच्छ्रमधुयोग॥ लोहचूनमधुसायले  
नाशकृच्छ्रकारोग॥४३॥ शित्तातुल्ययवसारभनिमूत्रकृच्छ्रकोंदेह॥ बीजकर्कटीशर्करामूत्रकृच्छ्र  
कोंलेह॥४४॥ अणालादिकायपथरीमूत्रकृच्छ्रकोंओषधदोहा॥ रसेकंड्यारीआनकैपीवैक  
द्रीलाग॥ अथवामधुकेसायदेनाशहोईकृच्छ्ररोग॥४५॥ एलावासारेणुकापीपलीहरडैपाई  
महलठीअरुगोषरूपाहनभेदभिलाई॥४६॥ काठाकरिकैदीजीयेसिताशिलाजितुधारि॥  
मूत्रकृच्छ्रअरूपथरीपीवत्तपीडाटारि॥४७॥ शिलाजीतुपीपलिदृषदभेदवहुतसमआन  
गुडसेग्रहरैजुमूत्रकृच्छ्रअथजलेतुदलपान॥४८॥ अथकवित्त३१॥ अग्निहोअनारदाने



ये  
इष्ट

त्रिकटुजरानिश्चिवकजवानीधान्यपीपलिमिलाईये॥ नागरविडंगाल् <sup>मोषा</sup> मेघनादतित्ति  
डीसोंजलसेतीपीसिकरिघृतमैरलाईये॥ कहिमानघृतप्रस्थविधिसौपचावेवेद्यसिद्धि  
येपानपानमात्राहिषिलाईये॥ बीसेमेहमूत्रघातपथरीसकृच्छुरोगकामलाविवेधनाहग  
दकौहटाईये॥ ४४॥ दोहा॥ यहदाडिमघृतमूलहरऔररोगसबजाहि॥ पंडितकह्योविचा  
रिकैइनसमऔषधनाहि॥ ४५॥ इतिदाडिमादिघृतयोगरत्नावलीसोंकह्यो॥ इतिमूत्रकृच्छ्र  
त्रघातपथरीचिकित्सा॥ अथप्रमेहनिदानदोहा॥ स्वप्नदिवसवैठवहुतनवाअथान्नपय  
पान॥ ग्राम्पुडकदधिआनूपरसनिमित्तमेहयहजान॥ ४६॥ श्लेष्माकेदशसाध्यहैयाप्य  
कहेषदपित्त॥ पवनचारअसाध्यहैकहिचतुरनरथित्त॥ ४७॥ समकरियाकफकीकहत  
कष्टक्रियापित्तजान॥ दुष्टहोईहेवातकीकरैतुहोईहेरान॥ ४८॥ अथबीजप्रमेहनामक

राम  
इष्ट



पन दोहा ॥ इक्षु साद्रक मेही सुरं स्वतः शुक्र रजः पीत ॥ मेदं मेदला लायुत तं तु दारक हिमीत ॥ ५४ ॥  
नीलकालं मे जिहृति शिरः कृत हस्ति वसामेह ॥ गज्जा अरु दोद्रा भमनि वीस मेहं कहिं ॥ ५५ ॥ इति  
नामक पन दोहा ॥ हृदै गुदा शिरः अंग मुख पृष्ठ मर्म पीडि होई ॥ अगनि मेद दुर्वल विषम नाहिन डो  
ष धकोई ॥ ५६ ॥ इनके लछन समजि कै करहु चिकित्सा जान ॥ इनमें के इक्षु अति घोर असा  
ध्य पहिचान ॥ ५७ ॥ इति निदाने ॥ अथ चिकित्सा दोहा ॥ वडी इला इची खंड सम चूरन टंक इकले  
ह ॥ भोजन कीजे पण्य को कहा करै परमेह ॥ ५८ ॥ कत्य स्वतदा डिम कली महलठी सम खंड ॥ च  
नली जेटंक हेलै परमेह विहेड ॥ ५९ ॥ शिला जीतु अरु एलची शोषा होली पाई ॥ सब औषधं सम  
खंड ले शीतल जल सोयाई ॥ ६० ॥ मूत्र कृच्छ्र अरु पत्यरी मूत्र वेध दै जाई ॥ यह विशेष गुण याहि  
में सत्र प्रमेह मिटि जाई ॥ ६१ ॥ अथ चंद्र प्रभा गुटिका शाई धरात दोहा ॥ वचा मुसदेव दाह चव



त्रिफलात्रिकचूर॥ गजपीपलिधनीयाहलदत्रिकटार्पीपलिमूल॥ ६२॥ अतिविषदावीचार  
द्वयतीनजुलवणविडंग॥ सोवनमाषीभस्मकरिऔरकिराइतासंग॥ ६३॥ टंकटंकसलीजी  
येकीजेयहपरमान॥ त्वचापत्रएलातिवीरोचनवंशजुठान॥ ६४॥ कर्षकर्षदंतीववहुकरिच  
रनसबआन॥ दोईकर्षहतलोहपुनिचारिकर्षसितजान॥ ६५॥ कर्षआठशिलाजीतधारि  
गुलुलेअठकर्ष॥ चूरनकूटोमेलिसवकरहुगोटिकाहर्ष॥ ६६॥ गोलीकरिटंकचारकी  
नितप्रतिषावैएक॥ मूत्रकृष्णरुअस्मरीमूत्रघातकौछेक॥ ६७॥ मूलनय्यआनाहवंध  
मेहनवीसप्रमेह॥ पांडुकामलाअठवृद्धरकसाअर्बुदलेह॥ ६८॥ काससासअत्रंवृद्धक  
टिप्पीहहलीमकजास॥ दंतउदरतियरजहजाकुष्ठभगंदरनाश॥ ६९॥ मुकपुसगतनयन  
गदवायुपित्तकफजान॥ जाहिअहचिमंदागिनपुनिवृष्णरसायनजान॥ ७०॥ सात्रादीजे



दक्षिणचंद्रप्रभायहमेष॥ शरिधरमैकहीग्रंथनिसंवकीसाय॥ ७१॥ इतिचंद्रप्रभागेली॥  
दोहा॥ मूषाणत्रिफलादारद्वयलवणरीतचव्याल॥ पुहकरवायविडंगचित्रंगजपीपली  
महिमेला॥ ७२॥ निशादोइहैसारिवाश्रुगीकेसरनाग॥ सोवनमाषीमोथदीप्पसवसमकरि  
येभाग॥ ७३॥ सवसमदीजैलोहरजशिलाजीतसमदेह॥ गुग्गुलुमेलौलोहसमकरहुगो  
टिकाएह॥ ७४॥ मात्राषावैएकपिचुमधुसंगषाईरत्नाई॥ चंद्रप्रभाकेरोगसवइनसेवनसैजा  
ई॥ ७५॥ इतिचंद्रप्रभात्रयणगुटिकादोहा॥ एरंडवासाएलचीपीसहुतुल्यमिलाई॥ दक्षिणे  
दोजेप्रातऊठिमूत्रकृष्मिटिजाई॥ ७६॥ लैचूहेकींमोगणीतातेजलसोपीस॥ नाभितलैले  
पनकरहुमूत्ररोधनहिंदोस॥ ७७॥ त्रिफलासंधागोषरूवीजकर्कटीआन॥ तसिनीरसोपी  
जीयेमूत्ररोधकीहान॥ ७८॥ अथपत्यरीकायः दोहा॥ वारूणशुठीगोषरूकायकरोसव



मेलि॥ पावहगुडयवधारपुनिवातपत्थरीरेलि॥ ७८॥ अथप्रमेहअपथ्यकथनदोहा॥ धूमपानमोक्ष  
णारक्तस्रवसमधुरअन्नषाई॥ मेषुनघृतगुडहीरफुकसुरातैलइच्छुषाई॥ ७९॥ स्वादुलवणक  
ष्माडदुष्टअंबुमिठाईजान॥ अशनविहृदसौवीरपुनिअभिष्यदवस्तुमलान॥ ८०॥ अनूप  
मांसनिष्पावभनिमूत्रवेगइनमोहि॥ वर्जितएहप्रमेहकोंइनकोंसेवैकोहि॥ ८१॥ इतिप्रमेहअ  
पथ्य॥ इतिमूत्रकृच्छ्रपथरीप्रमेहचिकित्सासमाप्ता॥ अथमेदचिकित्सादोहा॥ त्रिकुटात्रिफला  
मोथचित्रगुग्गुलुवायविडंग॥ कफमेदीजोव्याधिहृईकरैतासुकोभंग॥ ८२॥ मधुजलसेवेनि  
त्यदिनमेदस्पृलताहोई॥ रहैपथ्यभोगीपुरुषस्पृलदेहकोंषोई॥ ८३॥ इतिमेदचिकित्सा॥ अ  
थउदरचिकित्सादोहा॥ त्रिकुटासंधाजीरपुनिअजवाइनसोंमेलि॥ ८४॥ देहचूर्णतक्रसाथ  
सोंशोफउदरकोंरेलि॥ ८५॥ पागदंतीकुठवचतीनलूनयवसार॥ जीराहिंगुअजवाइनी॥

रामः



सज्जीचित्रकधार॥ ८६॥ शुष्कीचवकसमचूर्णकरिउष्मजुजलसोदेई॥ वातोदरजो रोगहेतु  
को नाशकरेई॥ ८७॥ करंजबीजइंद्रवासाणीमूलीबीजरलाई॥ शंखभस्मको जी सहित पीत  
जलोदरजाई॥ ८८॥ माहिषजलअरुउष्टुपयमूत्रधेनुकापान॥ करै नभोजनउदरगदपीये  
एहपरधान॥ ८९॥ धेनुमूत्रसवतै अधिकवालवृद्धको देई॥ उदररोगअरुशोथसबइनका  
नाशकरेई॥ ९०॥ दंतीतिवीअरुशंखिनीनीलीत्रिफलारात॥ वाइविडंगकंपिह्नसमइंद्रवा  
रुनीघात॥ ९१॥ इनकाचूरनएककरिटंकएकसमदेई॥ गोनरकह्योप्रशस्तसबउदरबुद्धि  
नाशेई॥ ९२॥ इटसटदर्वीहरडसमतामहिछिन्नामेनि॥ पीवहुमाहिषमूत्रसोत्वचादोषको  
पेलि॥ ९३॥ उदरशोथअरुपोडुकफमुखप्रसेकहेजास॥ देहथूलताहोईजोकरैतासकोनाश  
९४॥ अथकायदोहा॥ इटसटनिवपटोलशुष्कीकटुकीप्रमथगिलाई॥ दर्वीसमलेकाथकरि



वे ४  
७१

उदर शोथ नहिं जोई ॥ ४५ ॥ कास शूल सर्वोग पुनि शूल स्वास संयुक्त ॥ कह्यो ह्यो इरोग को करै  
तासु को मुक्त ॥ ४६ ॥ अथ वृद्ध नारायणी चूर्ण कवित्त ॥ जीरक त्रिफला वचा त्रिकटु ह पुषधान्य  
कठ शटी अजमोद स्थूल जीर दी जीये ॥ चित्रक विडंग वायु अजगंधा शत पुष्या वीरजटा सं  
चलून दोइ पार दी जीये ॥ दीपनी मिलाइ कटु यथि सव प्रत्याहार चूक धरि उन ती शमात्रा  
सम की जीये ॥ दुद्रफला दोई भाग च वृत्ति त्रिभाग मे लि दंती ली जै ती न भाग वज्री चौ करी जी  
ये ॥ ४७ ॥ दोहा ॥ ए औषध नौ तन स कल कूटि छाणि अछ वास ॥ यह चूर्णारे चक उदर करै रो  
ग कानास ॥ ४८ ॥ पाचन स्नेहन आदिय हस्ति गंध को रुको योग ॥ कहें और सव नाम लेत व  
जानै सव लोग ॥ ४९ ॥ कवित्त ३१ ॥ कास स्वास पांडुरोग ज्वर कुष्ठ गल ग्रह धूम ध्वज मंद हो  
त ह दे रोग जाचिये ॥ और जो राणी गदगुदा के निकट व्रण अनृणान धेनु दूध इनाही सों ।

रामः



सानिये ॥ गुल्मको वदरनारराखा कायवातरोग अरं सदा डिमजल घृतविषयानिये ॥ धेनुत  
कपेटरोगवणि दुगधजोग अजीराण कों को सजल अनूपान जानिये ॥ १०० ॥ दोहा ॥ पेटपीडसौ  
वीरजल दहीमसु विडभंग ॥ लेहमद्य आध्मानगद अनूपान के संग ॥ १ ॥ वृद्धनारायण चूर्ण  
यह वातरोग सब जोहि ॥ पेडित देह विचारिके रोगी निह चै सोहि ॥ २ ॥ इति वृद्धनारायणी ।  
चूर्ण ॥ अथ लघुनारायण चूर्ण दोहा ॥ इक पिचुली जै पीपली ति वी एक पलमान ॥ सेत खंड पल  
मेलिके की जै चूरन जान ॥ ३ ॥ जाहि उदर आध्मानगद विटको दरक फपित ॥ पिचुमात्रा चर  
ण सहित मूलरोग को पित ॥ ४ ॥ इति लघुनारायण चूर्ण वातविकारे दोहा ॥ ली जै पल इक  
शुंठी गुड गोली करिके बाई ॥ उदररोग के नाश को क ह्यो वैद्यमन लाई ॥ ५ ॥ अथ वज्रचार  
दोहा ॥ माणि मंथ सौ चरसमुदका चलूण से लेह ॥ यवाधार टेकण सजी तार तुल्य यह ले



देह ॥ ६ ॥ सवसमचूराकीजीयेआकदीरनुहीदीर ॥ तीनतीनकीभावनाआत्मपरबोधी  
 ॥ ७ ॥ पत्रजुलीजेआककेतापरलेपलगाई ॥ धरीपिठरीमध्यदलऊपरिसुडसाई ॥ ले  
 पजुकीजेवसनमृतधरीयेधूपसुकाय ॥ हांडीकोंगजपुटकरहुगोमयअगनिपचूय  
 ॥ जक्षीतलतवकाठिलेचूरामेलाएह ॥ अषाणत्रिफलाजीरनिशिनिचवर्कचि  
 वसमदेह ॥ १० ॥ अर्द्धचारचूराअर्द्धदोइटेककहिमान ॥ गुल्मशूलअरुउदरदुख  
 शोथअजीराहाने ॥ ११ ॥ जाकीभूषजुमेंदपुनिताकोवहतीभूष ॥ पेटअफारासीहलि  
 फजावहिआतेदुष ॥ १२ ॥ बायहोइजाकेअधिकतप्तदेहजलपान ॥ पित्तअधिकजोघ  
 तसहितकफगोमूत्रवृषान ॥ १३ ॥ काजीसेतीदोषत्रयअनूपानहेएह ॥ वंज्रचारस  
 वकोंकहेइमरोगानिकोदेह ॥ १४ ॥ इतिवञ्ज्रचारः ॥ अथविंदवृत्तरचनेकथनदेह



है पलनी जे अर्क पयषट्पल थो हरि दीर ॥ पल पल नी जे औषधी कहौ नाम अवधीर ॥ १५ ॥  
हर देहर मलनी लनी चित्रक दंती मेलि ॥ किरमाला शंख निति वीश्या मार्क पिल भेलि ॥ १६ ॥  
यह औषध करी एक ठे प्रस्था क घृत पाई ॥ अगनियोग पचाई कै विंदु मात्र ले पाई ॥ १७ ॥  
पावे जे ते विंदु न रंति रेचन जान ॥ अलभ गंदर गुल्म कुष्ठ उदावर्त गदहान ॥ १८ ॥ मलि  
न कोष्ठ अरु उदर गदरेचन को यह भाष ॥ या को विंदु घृत नाम है लिख्यो ग्रंथ की शाख ॥ १९ ॥  
इति विंदु घृत ॥ इति उदर रोग चिकित्सा ॥ अथ शोथ चिकित्सा दोहा ॥ वात शोथ तन जा सकै  
अर्द्ध मास ति वी पाई ॥ अथ वा एरंड ते लपय पेट वेध मिटि जाई ॥ २० ॥ कड़नी व पुनर्न वा  
हर दे प्रुठी गिलोई ॥ देवदारु पटोल दल काथ करौ सब कोई ॥ २१ ॥ अलघ घ अरु पांडुग  
दस्व उदर दुख जाई ॥ सर्व शोथ तन की हरै कह्यो जु कवि समुजाई ॥ २२ ॥ इति शोथ को



२ इति पुनर्नर्वादि कायः दोहा ॥ एरंडशुंठीपुनर्नर्वापेचमूलकरिकायः ॥ वातशोथकोशस्तहैहंकलीमैगायः ॥ २४ ॥

वे०

७३

कायः दोहा ॥ देवदारुहिन्नाहरडसंपुनर्नर्वाघालि ॥ कायमूत्रपुरसंगयत्वेचाशोथको  
शालि ॥ २३ ॥ स्वेदपांडुजाडाउदरऊर्द्धश्लेष्मकोषाई ॥ कीनोहैउपगारनररहेपथ्यसर्वकोई ॥  
इति कायः दोहा ॥ धनीयाजीरशुंठीवन्हिकाणकड्यारीदेह ॥ पाठनिशामगधाजटागजपीप  
लिसमवेद ॥ २५ ॥ चूणापीजेइस्मजलतामहिमेलियप्रातसमैजोयाइयैशोथरोगकोपेलि ॥  
इतिकृष्मादिचूर्णदोहा ॥ गुडअरुआडकशुंठीगुडगुडहरदेयहमेलि ॥ अथवागुडपीप  
लिकरहशोथअस्मकीरेलि ॥ २७ ॥ अथशोथकोलेपदोहा ॥ इटसटनागरकल्ककरिधे  
नुमूत्रमहिपीसि ॥ तापरिलेपनकीजीयैशोथअंगनहिदीस ॥ २८ ॥ दादगिलोइपुनर्नर्वा  
रसआडकदशमूल ॥ आडकलीजेप्रस्थरसगुडातुलामहिपूर ॥ ३० ॥ एकहैसर्वमेलि  
केअंगनियोशकरिकाय ॥ तामहिमैलोचक्कलदित्वचाकोषुपत्रसाथ ॥ ३१ ॥ कर्षप्रभा

रामः

७३



नाचूर नदी जै भेलि ॥ तामहि कुडव प्रमन मधुशर्तिल कैत वं भेलि ॥ ३२ ॥ मथौ चतुर दार्वी से  
घन कही पुन नै वालेह ॥ साध्य असाध्य विचारि कैत वषाने कौ देह ॥ ३३ ॥ जाहि अरु चि अरु  
शोथ तन स्मय काश हर प्रल ॥ लगे भूष अरु वाण करइन सम नाहित ल ॥ ३४ ॥ इति पुन न  
बादिलेह दोहा ॥ हरह काथ दशमूल जल परमित नी जै कंस ॥ तामहि डारह हर दशत  
तुला दास पुनि अश ॥ ३५ ॥ अगनि मंद पंरि पाक करिलेह स दश दै जाई ॥ तामहि त्रिकटाचा  
र चतुःपल दै माहिर लाई ॥ ३६ ॥ कर्म कर्म त्रिसुगंध शुभ प्रस्य आधम धुलेह ॥ काथ उष्म ज  
वशीत कैत वहि डारि योह ॥ ३७ ॥ ए दशमूल हरीत की कही चरक अरु विआन ॥ शोथ संक  
न सर्वोग की शिवा कंस अभिधान ॥ ३८ ॥ हरै प्रल दुर्जय महा गुल्म अशोपोड रोग ॥ नाहि  
अरोचक मेह ज्वर उदर रोग कौ जोग ॥ ३९ ॥ इति दशमूल हरीत की ॥ अथ कंस हरीत की ॥



वे ४  
७४

दोहा॥ करहु काय दशमूलवर के सवी च जल घालि॥ हर डै ली जै एक सौ शत पल दाव  
उवाल॥ ३९॥ सिद्ध भई ले ही जव हिता मै त्रिकटा देह॥ ती न गंध ह पुषा स्थिरा सब सम  
मेलो एह॥ ४०॥ अर्द्ध प्रस्यम धुस छ कर शीतल है तव पाई॥ यवा वारता महि धरौ क  
रो लेह मन भाई॥ ४१॥ हर ड एक भ छन करहु शुक्ति मान लेयाई॥ कास अरोच क गुन  
मज्वरु मीह मेह सब जाई॥ ४२॥ पांडुरोग अरु उदर गद दोष ती न है जास॥ आम वात  
वै वायु कृश अरु पित्त कानाश॥ ४३॥ शुक्र दोष अरु असृग सब वात दोष मूत्र रोग॥  
कंस हर ड अभिधान है प्रपथु रोग को जोग॥ ४४॥ इति कंस हरीत की॥ अथ शोथ ग  
ण औषध दोहा॥ देवदारु दंती ति वीरु ठ पद कर जान॥ आस गंध अरणी हर ड शुंठी श  
ता वरान॥ ४५॥ हलद कनेर सुहां ज नारवटि र श्रेक विधार॥ इट सट मरु या रासन यो

राम  
७४



हरित्प्रभुनविचार॥४६॥गुम्मातोरीमैफलनप्ररुमजीठारेंड॥एऔषधहैशोथकेकरैताहि  
शतषंड॥४७॥अथशोथउपड्वदोह॥स्त्रासछर्दितस्माश्वसनअरुचित्तपुष्टितिसार॥क  
शतदिहीसुताउपड्ववाहविचार॥४८॥पादशोथनरऊर्द्धगतिनारीमुखगतिनीच  
शोथगुह्यनारीपुंर्यकहोताहियमवीच॥४९॥इतिउपड्वः॥इतिश्वपथुरोगचिकित्सा॥  
अथअनुक्रुंणिकादोह॥व्याधिपवनअर्दितकठिनवातरक्तकहीआन॥आमवात  
ऊरुस्तंभपुनिशूलवीचपहिचान॥५०॥उदावर्तआनाहहियमूत्रकुक्षपरमेह॥मेद  
उदरअरुपत्थरीशोथखंडमैछेह॥५१॥सुमतिमेरुगुरुचरणयुगनमतिशीशामुनिमान॥कवि  
प्रसन्नमुजऊपप्रगटकह्यौयहज्ञान॥५२॥इतिश्रीवाचनाचार्यश्रीसुमतिमेरुगणित  
छिष्यमुनिमानजीकृतभाषानिदानचिकित्साकविविनोदनामभाषाखंडचतुर्थसमा



वे०  
७५

प्रम॥ ४॥ अथ अंडवृद्ध चिकित्सा दोहा॥ संधा जीरा हिंगु सम सरसों तेल पचाई॥ लेप जु की  
जे प्रात उठि अंडवृद्धि मिटि जाई॥ १॥ इति तेल दोहा॥ त्रिफला चूरन पीसि कै धेनु मूत्र सहि  
घालि॥ प्रात समै जव पी जीये अंड शोथ को टालि॥ २॥ एरंड तेल विहाल पुनि पय घृत सों संया  
ग॥ प्रात समै जो पी जीये नाश होई अंड रोग॥ ३॥ गो घृत लौ न पुन नैवा आत पमाहि पचाई॥ ले  
प पतालू प्रात उठि शोथ अंड की जाई॥ ४॥ शरपेंखे की लेह जड टोक एक घृत संग॥ मासा क  
सेवन करै अंड को भंग॥ ५॥ अथ लेप दोहा॥ एरंड जीरा कठ पुनि बचहौ वेर मिलानाई॥  
को जी सों जो ले पीये अथ शोथ मिटि जाई॥ ६॥ पंचवृद्ध की छाल ले घृत सों लेप बनानाई॥  
अथ बाकाठा की जीये तापरि सेकु कराई॥ ७॥ अथ पंचवल्कल दोहा॥ बडै पाल गुह्यर  
पिलुग पारस पी पल जान॥ एपौ चोव द्वादशी के बल कल पंचयह मान॥ ८॥ वचा सवै प

राम  
७५



नीजीयेजलसोंकीजैलेप॥ अंडशोकाकानाशकहिबडीजानियहयेप॥ येत्तचाशियु॥  
रसर्षपापीसहजलसंयोग॥ फ्लेसापवेनकाशोयजौकरैनाशयहरोग॥ १०॥ कुंठकठअ  
रुद्धिन्नपुनिलेहअगरदेवदारु॥ आरनालसंगमूत्रकेलेपशोथकोंदार॥ ११॥ रासना  
रंडगोषरुसुहगंधोजुगिलोई॥ वलाकाथरुवतेलसोंअंडवृद्धिकोंषोई॥ १२॥ कुंदरु  
गेहचूर्णसमभेददूधसोंपीसि॥ सुखोष्णकीजैलेपयहब्रध्मफलकोंषीस॥ १३॥ गोक्षु  
रसैधातुध्रुंठीदृषदभेददेवदारु॥ वायविडंगघृतचूर्णसंगब्रध्मजुरोगविदार  
१४॥ इतिअंडवृद्धअत्रवृद्धब्रध्मचिकित्सा॥ अथगलगंडचिकित्सादोहा॥ सरसों  
बीजसुहांजनाशाणकेबीजरत्नाई॥ यवलेमूलीबीजसमआम्लतकमैपाई॥ १५॥ पी  
सिलेपगलगंडकोंअथिगंडगलमाल॥ बहुतकालकेरोगयहजाइसवेप्रेमाल॥ १६॥



इति गलगंड दोहा ॥ त्रिफलापीपलिराजं वृक्षसमकरिपीसौ आन ॥ तस्योदकसौपीजीये गंडमा-  
 लकी हान ॥ १७ ॥ श्लोकः ॥ आरग्वधशिफादिप्रपिष्टाते दुलवारिणा ॥ सम्यक् नस्य प्रलेपाभ्यां गं-  
 डमालासमुद्धरेत् ॥ १८ ॥ इति गंडमाल दोहा ॥ अंठभाडेगी समकरहु ते दुलजल मैमेलि ॥ कं-  
 ठलेपजे कीजीये कठिन अजीरी रेलि ॥ १९ ॥ इति हेजीर दोहा ॥ दशापल लेहु कचनारत्वच-  
 त्रिफलाषट्पल लेहु ॥ त्रिकटाली जैतीन पल वरुणा पल इक लेहु ॥ २० ॥ कर्षक र्षाणी जी-  
 तज इलाई चोपान ॥ गुग्गुलुसवसमं आनि कैकी जै गुटिका जान ॥ २१ ॥ टेका कभदाण-  
 करै रौख काय सादेइ ॥ अथवा दी जै तप्त जल मुंडी काय करैइ ॥ २२ ॥ गंडमाल त्राण कृष्ट ग्रैथिम-  
 हा भगं दरजास ॥ गोली या वै प्रात उठि होई अर्बुद का नाश ॥ २३ ॥ नीव पत्र अरु लै रूपा भस्म भी-  
 ला वेघालि ॥ छाग मूत्र सौपी सि कै लेपन अपत्ती दाल ॥ २४ ॥ श्लोकः ॥ स्वर्जिका मूल कक्षा-



शरवचूर्णसमन्वितः प्रलेपो विहितः। श्लो हंति ग्रंथ्यर्वुर्दोदिकान्॥२५॥ इति गलगंडगंडस  
नहे जीर्यं ग्रंथ्यर्वुर्दोपची चिकित्सा समाप्ता दोहा॥ पीपलि त्रिफला दारुणुं ठिडक टमे लो आ  
न॥ सव श्लो मध्याह्नो इपल सम विधार ले जान॥२६॥ भवौ चूर्ण को जी सहित क र्थ मान है ए  
ह॥ श्लो पद जा के रोग है ता को तुरत हरे ह॥२७॥ हरड धतर सु हो जना निरगुंडी दल ले ई  
सर सौ पीत पन ने वा जल सों लेप करे ई॥२८॥ चरन ठरन श्लो पद हरन वह त दिना का जा  
हि॥ सिद्ध योग में एक ह्योर कत क ठा वो ता हि॥२९॥ इति श्लो पद लेप दोहा॥ हरडै सैं धव धा  
त की ता को करिये चूर्ण॥ घृत मधु से ती चाटिये हरे विद्रधि को तर्ण॥३०॥ इति विद्रधि चिकि  
त्सा॥ अथ व्रण शोथ चिकित्सा दोहा॥ इट सट दारु सु हो जना दश जड शायर ना ई शोथ  
होई कफ वात की लेप की ये सो जा ई॥३१॥ पांच पई सामो मले घृत सिरसा ही आठ॥ एक क



सीरातुत्यभनिऔरकह्योसुनिपाठ॥३२॥घृतपवारिमधिमोमदेतामेंसंगफपीसि॥करिइक  
 ठसवमेतिकैवस्त्राणिडविमीस॥३३॥लाईवस्त्रब्रणऊपरिदिनअंतरकेदोई॥ब्रणचोदी  
 दाहणमहाताकोनाशकरेई॥३४॥पुनःचौपाई॥नीलाथोथालेहजलाई॥खैरकपीरारालामि  
 लाई॥मुरदासिंगपीसिकैलेह॥जोघृतसवतेंचौगुनदेह॥३५॥मलमजुकीजैविधिसोंआन  
 वहतवेरजलेमथोसुजान॥ब्रणकीजातिरहेनहीकोई॥मांसवठेसुरदारनहोई॥३६॥  
 इतिब्रणमलमजुहा॥भस्मजुकीजैआनियवतिलकातेलमिलाई॥अगनिदगधको  
 लेपहैछिनमेंताहिमिलाई॥३७॥इतिब्रणचिकित्सादोहा॥ईटपुरातनअंठीलेवटप  
 त्रअंठीगिलोई॥ईटसटचूरनसूक्ष्मकरिलेपभगंदरहोई॥३८॥धत्रीदेखोहलदपु  
 निपीसहुनीरमिलाई॥प्रातसमेंलेपकरैरोगभगंदरजाई॥३९॥अस्थिलेहमेंजा



रकौरसत्रिफलासोपीसि॥ लाबोधसिकै॥ परिहोई भगदरबीस॥ ४०॥ षुंठीहलदवटपत्रलेसे॥  
समजुगिलोई॥ जाइपत्रघसिलाइयेनाशभगदरहोई॥ ४१॥ इतिभगदरचिकित्सा॥ अथउप  
देशहेतुकणनदोहा॥ अतिप्रसंगतियसोंकरैयोनिदोषसैगन॥ हस्तदंतनखघाततेचो  
टअधावनजा॥ ४२॥ यातेउपजैमेदुगदकहेताहिउपदेश॥ करैसमजिताकिकियाह  
रैरोगकाअंश॥ ४३॥ अथचिकित्सादोहा॥ त्रिफलाकीजैकायपुनिसेचनकीजैसार॥ रसभ  
गराप्रहालब्रणउपदेशहोहेनाश॥ ४४॥ त्रिफलाकरियेदग्धपुनिलोहपात्रमेंलेई॥ मधु  
सोंलेपनकीजीयेब्रणउपदेशहरेई॥ ४५॥ इतिउपदेशचिकित्सा॥ अथकुहचिकित्सादो  
हा॥ चित्राकुठइलाईचीरसवतिदेतीआन॥ शौंफविडेगअरुबरटीकुहलेपकरिहान॥  
४६॥ राजवृक्षकेपत्रलेपीसहुकोजीसाय॥ दद्रुसिध्माकुहकिटिभहरैनिकटजगनाथ॥



४७॥ पवाडवीज अरुवाकुची सखेपतिलमहिमेनि॥ निशादोडकुठ्ठमोयसमतकपोसिकेमेनि ४८॥  
 जेपनकीजेदडुसव अरुविचर्चिका जोई॥ दासणकेडूकुष्टसवनाशकारणकोहोई॥ ४९॥ इति  
 लेपदोहा॥ खेरनिववासात्रिफलपटोलपत्रगिलोई॥ समचूराणजलपीजीयेनाशकुष्टको  
 होई॥ ५०॥ चौपाई॥ नीवगिलोईनिशावचदास॥ कडुकीत्रिफलाविचलेडास॥ दासहलदवा  
 साजुविडंग॥ चूरनपीसिपीवोजलसंग॥ ५१॥ कुष्टरोगकोकहोवनाई॥ कंडूदडूछिनमहि  
 जाई॥ ए औषधुअनुभौकरिलीना॥ सिद्धयोगाजानिप्रवीना॥ ५२॥ इतिकुष्टचूराणदोहा  
 चित्रलोवअरुकुठवचगुंजापीसहुआनि॥ कोजीसोंजोलेपीयेस्वेतकुष्टकीहानि॥ ५३॥  
 ऊगाभसमअरुवावचीचित्रामनशिनपाई॥ कोजीसोंजोलेपीयेस्वेतकुष्टमिदिजाई॥ ५४॥  
 समसिंदूरअरुमरिचसममहिषीधूतसंयोग॥ मूथिकेलेपजुकीजीयेनाशयामकारेण॥ ५५॥



नीलाश्यावावची गंधकहरदमिलाई संवत्तें दुगुं न पवाड धरिसाजीची करलाई ॥ ५६ ॥ स  
र्दनकी जैती न दिन कटुक ते लमहि पाई ॥ नाशे पाम अनेक विधि महिषी गोवर न्हाई ॥ ५७ ॥  
अथ मरिचादि तैले कवित्त ३१ ॥ चंदन रक्त कुठ्ठी पीपलि मरिच छड करवीर हरताल दे  
वदार मेलिये ॥ मज शिल आकटू धगोवर कोर सविष डारियै रजनी दोनु आध पल भेलि  
ये ॥ सवमि लिंग ककरि चूरन सपिष्ट की जै कटुक ते लप्रस्थली जै धेनु मूत्र ठेलिये ॥ मंद मे  
द अगनि पचाईली जै एठौर वासन कडाही मत्तता महि करेलिये ॥ ५८ ॥ दोहा ॥ केंद्र पाम विच  
र्विका अरु विस्फोट वषान ॥ मल नें हुंते शोत होई त्वचा जु कनक समान ॥ ५९ ॥ खेत कुष्ठ त्र  
प्रवर सभानि कुष्ठ अठारह देह ॥ जराहरण नरवल करण मरिच ते लकही एह ॥ ६० ॥ इति  
मरिचादि तैले दोहा ॥ निगंध वावची दूव पुनि संधा शिवा पवार ॥ कोजी सेती ले पीये सह



वै०  
७८

रदादगवाई॥६१॥चौपाई॥सिंदूरगुगुलुरंभवतिआनि॥नीलायोयामेलिसमानी॥कडकतेल  
चौगुनत्रुपचाई॥कंडूपाससर्वदुखजाई॥६२॥इतिसिंदूरदितैलेदोहा॥हलदहूवसवपी  
सिकैलेपहुजलसोमेलि॥सहरपामदडुकठिनइनहिंरोगकोपेलि॥६३॥अथविसर्पक  
सृचिकित्सादोहा॥चेदनमोयईलाईचीतगरहरिद्रादोई॥छडमहलठीकुठसमखील  
शिराहकीहोई॥६४॥चूर्णपीसिघृतसाथमथिलेपहुकुसुकोदोई॥ज्वरविसर्पव्रणशोथ  
गदहरैदशोगयहलेई॥६५॥श्लोकसारंधरात्॥एलामोशीनिशायुगंमकुंखेवालकमेवच  
इतिरं॥चूर्णलेपोयेदशमोशघृतसुतः॥६६॥जलेनक्रियतेसुत्रैःदशोगइतिसिञ्जितः॥वि  
सर्पाश्चविसर्पकोटान्शोषान्दुष्टव्रणान्जयेत्॥६७॥इतिदशोगलेपः॥दोहो॥उत्पलचेद  
नरासनाअरुमहलठीदार॥चूर्णपीसिघृतदीरयुतलेपविसर्पकोटारु॥६८॥इतिविसर्प

रामः  
७८



लेपः॥ दोहा॥ रामसे नभाया कज्जु पत्र मणी वप देलं॥ विफला वासा यष्टिका अरु मस पर्यट को  
ल॥ ७०॥ हादशां गयह जोग है धृत सौ लेप वनाई॥ कह्यो एह विस्फोट को लेप की ये से जाई॥ ७१॥  
इति विस्फोट चिकित्सा दोहा॥ द्वे चंदन कदुरो हिणी पर्यट नी वडशीर॥ वासा धात्रि देरा लभा  
पटोपाठ भनिधीर॥ ७२॥ निंबादि कयह चूर्ण समतामहि मिश्री मेलि॥ बाहि चूर्ण जल पान सौ  
शीघ्र मसूरी रेलि॥ ७३॥ इति निंबादि चूर्ण दोहा॥ हरै रक्त मोक्षण किये विना औषधी जाई॥  
कहे असौ ध्यमसूरिका देव योग शुभयाई॥ ७४॥ इति मसूरिका चिकित्सा दोहा॥ कुठ सिंभा  
लु सारि वाचं दन डोडे पाई॥ सम करि पीसिहु लेप जल नूत वृषा न रहाई॥ ७५॥ इति लूप ले  
प दोहा॥ रंभा पत्र जुभ सम करितामहि हलद प्रसेग॥ जल सों कीजे लेप तन थंभ रोग को भं  
ग॥ ७६॥ चंदन मूली बीज पुनि टेका ता ल कपूर॥ रस जंभीरी लेप तन थिंभ रोग को चूर॥ ७७॥



वै०  
८०

गेधकचंदनमेलिसमं नीवूरससं लेप॥ सातदिवसमहिदेखियेथिं भरोगसंघेपं॥ ७८॥ इतिथि  
भचिकित्सा दोहा॥ अर्द्धदग्धकरि सीपिका दधिसोपीवैकोई॥ ए औषधपेडितकं ह्यौ नाशना  
रूवा होई॥ ७९॥ इति नारूवा दोहा॥ काकजंघाजडभस्मकरिशस्त्रघावमहिघालि॥ पीडा रक्तं  
प्रवाहबहुनाश होई ततकाल॥ ८०॥ इति शस्त्रघाव औषध दोहा॥ विजैसारकासीसनिशि  
मरिचदुगुनगुडलेई॥ गोलीकीजैपीसिकरिचोटपीडनरहेई॥ ८१॥ मैदाहलदमितलाईस  
मजलसं लेपौ अंग॥ टोकणकभक्षनकरौहरैजाहिअभिषेग॥ ८२॥ चोपाई॥ दधिसोंकाही  
पीडमिलाई॥ चोटव्यधावहुदिनकीजाई॥ हाल्योपाईलेपपुनिकरैचोटपीरतननिहचैह  
रे॥ ८३॥ इतिचोटचिकित्सा॥ अथमुखरोगंचिकित्सा दोहा॥ एलाकयुतवायीस्सममुखमें  
मेलौजास॥ पाकवदनअरुक्तमुखाईनतेहोवैनाश॥ ८४॥ वासारसअरुहहितनिलिदो॥

रामः  
८०



नुमथि कैदेई सात दिवस चरिौ सुवर्ण संतर कत नासेई ॥ ८५ ॥ नीला थोथा फि ८ कडी रत्ना क  
त्यु समान ॥ पीसि चूर्ण दोत्तै मलौ दठ पीडा की हान ॥ ८६ ॥ निश पुग्म पाठा कडू कुठ के पीला लौ  
द ॥ काल मेथिका ते जवलन चूरन परम प्रमोद ॥ ८७ ॥ सूक्ष्म जु छाण हवस्त्र म हिमने ह देत  
सौ लाई ॥ रक्त श्राव असु दंत रुक् वज्र दंत कै जाई ॥ ८८ ॥ स्वेत कत्य वासा कडू कुठ लोद सम आ  
न ॥ मोथ मजीठ मिलाई कै सम करि पीसहु जान ॥ ८९ ॥ दोत्त समन जो रक्त है औषध मलने दे  
ई ॥ पीड प्रवलन असु कीट दुरवता हिशी घहरिलेई ॥ ९० ॥ दाव गिलोई फल तीन ले दल चंवे ली  
पाई ॥ दाल हल दपाय सुनहु एली जै सम भाई ॥ ९१ ॥ करहु काय चातुर पुरुष कस्ली मधु सौ ले  
ई ॥ वदन पाक असु रक्त स्रव इन कानाश करेई ॥ ९२ ॥ इति कायः दोहा ॥ सर्प से धालोद वच  
ए औषध सम आन ॥ जल सौ वदन जु लेप करि नाश काल की जान ॥ ९३ ॥ जीरा सर सौ पीत ले अ



रुद्धलीरतिलस्याम ॥ पयसो लेपनकी जीयै रहै न छाड्की माम ॥ ८४ ॥ कुठहलद अरु लोद पदु ॥  
 औषधसम करिलेई ॥ नीवुरससो लेप करि छाया नाश करेई ॥ ८५ ॥ त्रिफलाकी जै कायसम करि  
 करली मुखमोहि ॥ वदनपाक अरु देत दुरव रोग दुहे के जोहि ॥ ८६ ॥ लोद अरु पाठा कडू अरु  
 मजीठ कुठलेई ॥ निशाते जवलमे लि कै सूक्ष्म चूरन करि देई ॥ ८७ ॥ यह चूरन सब ग्रंथ में  
 घसो दंत के मूल ॥ हरै रक्त द्विज के सकल के डूपी डा चूर ॥ ८८ ॥ हीग देत महिरा धियै दंत पीडे  
 मिट जाई ॥ जाई पात चवर्ण करहु चल दंत जा सुमिटाई ॥ ८९ ॥ अथ गलरो मप्रतीकार दोहा  
 त्रिफला दार्वी मोयत्व कत्रिडु दा कटु की दाय ॥ दोइ सहित गोली करहु रोग लैं कानां ॥ ९० ॥  
 वचामरि चपाठा कण सिंधु कुट्ट पलमान ॥ सबसम औषध मधु सहित गल ग्रंथी कर्षीन ॥ ९१ ॥  
 कटु की पाठा इडु यव मोया नारियती ॥ काठा करि कै धेनु जल पीये होई के रसी ॥ ९२ ॥ कुटु



व्योषदावीचचात्रिफलाशयः॥ मोधासमचूरनकरहगलपुदमधुसैषाई॥ इति चूर्णदो  
हा॥ पंचकोलतालीसदमिरीत्वगात्रुटिआन॥ मुष्ककयवशुकक्षारत्रयलेहुरीवेसममान॥ ४  
लेहपुरातनद्विगुणगुडगुटिकाअगनिसंयोग॥ गोलीवदरप्रमानधरिगुस्तयहेकंठ  
रोग॥ ५॥ पुष्ककलीजैभस्मकरिजलसंयोगलेह्वार॥ गुडसोगोलीवदरसमकंठरोगनिर  
वार॥ ६॥ इतिकंठरोगचिकित्सादोहा॥ पंचवल्कलककायअरुत्रिफलाकैजोग॥ वदन  
पाककोश्रुहेदौद्रसायमुखरोग॥ ७॥ इतिमुखदंतगलरोगचिकित्सादोहा॥ शृंगवेरसै  
धवमधुकतेलपक्ककरिलेई॥ ईषदुस्मधरिकानमैंताकीपीडहरेई॥ ९॥ आद्रकमूर्वाशि  
गुरसअरुवैगणरसमूल॥ सैंधवमधुसंयुक्तकरिपृथक्कर्णहरशूल॥ ८॥ इतिकर्णपीडा  
पांचयोगएकैकओषधदोहरैवीचकहेदोहा॥ पीतहोईजोआकपत्रकरोलेपघीसाय



ताकोतप्रसकाठिलेपाईकानलेहाथ॥**१०**॥कानपीडअरुअलवहुकानजुशब्दकरेई॥जा  
हिकीटअरुक्लेंदपुनिताकोतुरतगमेई॥**११**॥टेकदोईकिराईतापांचदोंकलेतेल॥अगनि  
जोगपचाईकैधरौकानकीगेल॥**१२**॥कह्योएहअनुभूतहैकीपौवेरदुइचार॥गुरुमुखसुवी  
करतव्यताकारावेदनाहार॥**१३**॥हीगंतुवरुअंठीसमसर्वपतेलपचाई॥काराअलपरा  
करहुरोगतुरतमेंजाई॥**१४**॥इतिहिंसादितैले॥लशुनअर्कतिलपत्ररसकानबीचमें  
पाई॥बहराफोडीपूतिमुखएतेरोगनसाई॥**१५**॥वचाअंठीदेवदारुअुनिसंध्यासोचरपाई  
अजामूत्रसोतप्तकरिकह्योअधिमिटिजाई॥**१६**॥लशुनकूटिरसकाठिरेईसदुष्मकरि  
पूर॥काराणादजोप्रवलकैकरोजाहिचकचूर॥**१७**॥चौलार्दलपाइकैरसकाठोषटसे  
ग॥पूतिजाहिकानेअवैकरैदरिनिसेक॥**१८**॥स्वादमूत्रलोआनिवैताहिअकुचीमे



लि॥ चूरनयावेटेकेदुइवाधिरकाकोकोपेलि॥ १८॥ इति कार्पण्यरोगचिकित्सा दोहा॥ हरडेद  
डिमफलसमदूवकसुंभरमाई॥ शीतवारिसोनासदेरत्तनासिकाजाई॥ १९॥ गुडशों।  
त्रिकुटामेलिकै नितउठगालीषाई॥ शीशपीडपीनसप्रवत्ततुरत्तरोगादि॥ टिजाई॥ २०॥  
फलविंदालतिलदुइप्रमितमरिचताहिसममेलि॥ नासदेहुजलसाथसोपीडापीन।  
सरेलि॥ २१॥ इति नासारोगचिकित्सा॥ अथ अनुक्रमणिका दोहा॥ अंडवृद्धिगलगंड।  
पुनिगंडमालअंजीर॥ अपचीअर्वुदग्रंथिपुनिविद्धिजानिवरवीर॥ २२॥ ब्रह्मभगं  
दजूपदेशकहेवीचइनामाहि॥ दुइमसूरसेक्षेपकरिविस्तरकहेनजाहि॥ २३॥ अवाण  
दंतमुखनासिकापंचमखंडमजार॥ रचीसुविधिमुनिमानजीसवजनकोसुखकार  
२४॥ इति श्रीरत्तरगछीयश्रीवाचनाचार्यश्रीसुमतिमेरुगणितछिष्यमुनिमानजीकृ



तभाषावैद्यविनोदनामनिदानचिकित्सासंक्षेपपंचमखंडसमाप्तः॥५॥ अथरोगनित्रचि-  
 कित्साप्रारम्भते दोहा॥ दालहलदसैंधवहरडरसवतिगेरुपिष्ट॥ बाहिरकीजेलेपअक्षि॥  
 रोगहोईनिकष्ट॥१॥ दारुहलदरसदोईसमचूरणसूक्ष्मपीसि॥ सन्ययुक्तअजनकर-  
 हुदाहपीडशीघ्रसीस॥२॥ चंदनगैरिकलोदसमजातीकुसुमरत्नाई॥ तामेंमेलेमुहलठी  
 लेपकरौमनभाई॥३॥ पित्तदाहकोलेपयहअरुणअक्षिहोईजाई॥ पीडाअधिकीहो-  
 ईजोकरैदूरियहनाई॥४॥ त्रिफलामिश्रीचूर्णकरिजलसंयोगसोसीच॥ आश्रितन-  
 नेत्रकोरहेनरोगअक्षिवीच॥५॥ सैंधागेरुदारुनिशिमुहलठीरसआन॥ मकरिपीसहु-  
 वारिसोलेपनेत्ररुजहान॥६॥ अथषडंगसौलुदोहा॥ वासानेवपटोलसमशित्तजुधात्री॥  
 विभीत॥ गुग्गुलुदारुकाशरोगअक्षीरोगकोजीत॥७॥ फोलअरुजणचीपडीअक्षिअरुण



द्वैजाई पीयो काय परा ता प वै रोग न रह आई ॥ ८ ॥ भीम सेन व पुर सुध पी सह व डंक दूध ॥  
अंजन की जै शुक्र को मिटे अक्षिका वृध ॥ ९ ॥ पल इक ली जै पी पनी ता सम फिटक डि देह  
दशमा सा थोथा धरहु पल इक मिसरी लेहु ॥ १० ॥ तामहि पल इक स्याम का च चरा स द्वा मं पी स नी  
वूरस गोली करहु अंजन फोला पीस ॥ ११ ॥ इति अंजन फोला ति मिर को गोली श्लोक ॥ घृतेन पुष्प  
मधुना श्रु पात भंजेन केंद्रु ति मिरंज लेन ॥ नक्तं ध्यत्ता को जी कत क पिष्टा पुन नैवानेत्र पुन नैवा  
करा ॥ १२ ॥ श्रेयं पुन नैवा मूलं घृत भृष्टं सदा जयेत् ॥ इति ग्रंथ कारेणोक्तं दोहा ॥ फल काति क  
अरुज सद भ निरस महि दी महि मे लि ॥ नयन हं अंजन की जीये स व रोग नि को पे लि ॥ १३ ॥ दो  
ई हल द सुरमा चिल क जाती रस सों मे लि ॥ अंजन की जे नेत्र को अधरा त्रि को रे लि ॥ १४ ॥ अथ  
पडवाल दोहा ॥ संधा को डे ते न महि घ सौ जु को शीया ल ॥ अंजन रग डा की करहु नेत्र पी ड प



डवाल ॥ १५ ॥ रसवति फिटडी शुद्ध लेतीय का दूध रलाई ॥ रग डहु को शीया लमें नें त्रवाल मि  
 टिजाई ॥ १६ ॥ चोषागे रुलवन गडम रिचती न सम जान ॥ लेपन जल सो की जीये होई बाल  
 की हान ॥ १७ ॥ अथ सेवल वाय को अंजन दोहा ॥ परवाली मोती जस दसंग श्री रस मे लि ॥  
 षट षट टेक जुनी जीये चूरन इक ठा भेलि ॥ १८ ॥ काही चाक सुदोत उष्टी नती नटंक  
 लेई ॥ अजा दूध को पपात्र में रग डा करि कै देई ॥ १९ ॥ अंजन की जेने त्रय दसवल वाई  
 कानाश ॥ दूध भात पथ्यनी जीये ॥ औषध है वास ॥ २० ॥ अथ नेत्र पोदली दोहा ॥ त्रिफला  
 सोण फिटकडी काही जीरा देई ॥ निशालो दहा ल्यो ॥ अफीम रसवति आनि मलिई ॥ २१ ॥  
 औषध सम पोदली करौ नेत्र के हेत ॥ नाश करै सब रोग को ॥ नैन को सुख देत ॥ २२ ॥ अ  
 थ अंजन तिमिर फोले को दोहा ॥ मन शिल निक्कु दाशे खस ॥ संधा सुरमा मे लि ॥ समुद्र



फेनअरुनिरमलीमिश्रीतामहिभैलि॥२३॥ अंजनछेलीदूधसेतिमिररोगसबजाहि॥ फोला।  
बोरावायसवनेत्रपीडनरहाइ॥२४॥ अथयेणवातातगाथा॥ अभ्यावरहवीयामिरियापेचेव  
वकाणमहाण॥ अंजेतहमयनयुगंकरेईअइनिम्मलादिठी॥२५॥ कुंकुमअगरकंपूरकुठ  
गर्जकेसरित्रुटिमेलि॥ चेदनरकततमालपत्रासमलीजेभैलि॥२६॥ सवसमसुरमाच  
णकरिसूक्ष्मपीसिनयनेज॥ नरनंपअंजनअष्टहैतिमिररोगकोभंज॥२७॥ प्रलोकः॥ अं  
वृकंवावराटेवाद्यधेसूक्ष्मेविचूर्णयेत्॥ अंजयेन्नवनीतेनहेतिपुष्पेचिरंतने॥२८॥ अथ  
अंजननिषिद्धदोहा॥ मद्यपानअरुआतडरनवज्वररोदनजास॥ उस्मेवेगविघातसव  
अंजननेत्रविनाश॥२९॥ अथनेत्रअपप्यकथनदोहा॥ अशुचिकोधमैथुनपवनवेगरोध  
वमिस्वाप॥ अशुनीदविटमूत्रनिशिभोजनअतिआलाप॥३०॥ देतविघर्षणछर्दिजलस



क्षम अछर देखि ॥ कटु तीक्ष्ण तो वृत्त पदु अम्ल उष्ण पुनिलेखि ॥ ३१ ॥ मत्स्य मोस जे गंगल सुराधर  
 स्नान कहि मान ॥ और विदाही वरजिये कहै अपण्य जान ॥ ३२ ॥ इति पथ्य ॥ इति नेत्र रोग चि ।  
 कित्सा ॥ अथ निघे टक यन ॥ गोधूम गुण दोहा ॥ वल कर शीतल मधुगुरु स्निग्ध रसायन जवन  
 तिय अशक्त जो होई को धेनु दुग्ध परवान ॥ १ ॥ उत्तम कृष्ण धेनु कहि श्वेत श्लेष्म गुरु होई ॥ ता  
 को घृत दीपन कृशन लघु याही है सोई ॥ २ ॥ इति सामान्य गुण ॥ अथ विशेष गुण दोहा ॥ अर्श  
 प्रद रभ्रम जीर्ण ज्वर यक्ष्मा अरु अतिसार ॥ इन को घृत अरु दुग्ध है कहै वैद्य निरधार ॥ ३ ॥ दो  
 ण देह अरु जीर्ण ज्वर क्षत क्षय को यह जान ॥ सम पय जल काठा करौ सो अमृत पय पान ॥ ४ ॥  
 अथ पात्र गुण कथन दोहा ॥ ताम्र पात्र महि हीर धर हरे पवन को एत ॥ केन कपाज कहि पित्त ।  
 को रजत श्लेष्म हर जेई ॥ ५ ॥ कोष पात्र के पान सो रक्त पित्त का नश ॥ माटी सब ते अधिक गुण ।



हरै दोष त्रय जास ॥ ६ ॥ इति पात्रं गुण दोहा ॥ उष्णधार हेशीतलं धुवन कर दीपन सो ॥ ७ ॥ तीन दो  
षनु तजानियै कहै वैद्य सब को ॥ ८ ॥ करै पान धारा शिशिर हेत दोष न जाश ॥ सुधा समान पे  
डित कह्यो वल कर कहियै जास ॥ ९ ॥ धेनु दुग्ध धारा उसन माहिष धारा शीत ॥ आ विषय  
शृत उष्ण भनि अजा शीत शृत मीत ॥ १० ॥ वात पित्त हर दुग्ध गो सब ग्रंथ निर्मल एह ॥ मन प्रस  
न्न अरु वहत वल कथित होई तब लेई ॥ ११ ॥ इति गो दुग्ध गुणः दोहा ॥ मधुर भैसगुरु स्निग्ध  
वल निद्रा प्रुक् करेई ॥ कफ कर शीतल जालियो ताहि दुधा हर लेई ॥ १२ ॥ इति महिषी गुणः  
दोहा ॥ हरै त्रिदोष छाली दुग्ध को डी तीषी साई ॥ अल्प काय जल पान तु छता तै रोग मिट जा  
ई ॥ १३ ॥ इति वकरी दुग्ध गुणः दोहा ॥ दुग्ध ऊंटणी उष्ण लघु कछुकल वका भेद ॥ अर्श उदर  
कृमि शोथ कफ वातानाह को भेद ॥ १४ ॥ इति ऊंटणी दुग्ध गुणः दोहा ॥ हरै पित्त शृत शीत पय



मारुतश्रुतकफउष्म॥ अतिपक्ववलवर्द्धनकरैस्त्रिगुणकोतिगुरुषुष्म॥ १४॥ आमदुग्धकहिवा  
तप्रदकफगुरुअधिकवषान॥ युवतिदूधपथ्यआमवरपक्वविदोषीजान॥ १५॥ पियेप्रातः।  
भिष्टंभपयगुरुअरुवहणजास॥ रजनीमुखवलनयनवरवातपित्तप्रमनाश॥ १६॥ कह्यो  
नजाईइन्ग्रेषमेंबैठेअधिकविस्तार॥ औरग्रंथतेदेखिलेसवपयलेहुविचार॥ १७॥ यहरु  
गमेंपरवर्ततेहैततेइन्कोलेई॥ इन्विनकामचलैनहींसवकोएहीदेई॥ १८॥ इतिगाइमें  
सछेलीभेडऊंटणीअरुस्त्रीतिसकेदूधकेगुणकहे॥ अथदधिगुणकथनहोहा॥ इवतपा।  
नीडारिकेपरिपक्वकरियेदूध॥ जामणादीजैरात्रिकोषानगरममुखरंध॥ १९॥ प्रातकांलद  
धिसघनवरमिष्टहोईतवषाई॥ इन्हिरोगकोशस्तहैकहोंनरागुणजाई॥ २०॥ मूत्रकृच्छ्रशीतो  
गपुनिविषमज्वरप्रतिश्याय॥ वलवर्द्धनअरुअरुचिकोचतीसारकुमिजाई॥ २१॥ कहेरो



गाणसर्वनिकेदेषिग्रंथमुनिमंन॥ मूरखडरैअपेकादसोंद्येतोहोईहैरान॥ २२॥ तातोंपहिलेदे  
षकोंसमजैपीछेरोग॥ देशकालवयदोषवलकरहुचिकित्सा॥ २३॥ इतिदहीमिश्र  
गुणदोहा॥ दहीअमलगुहूसरउसनपाकअमलहुईजाई॥ यातेग्राहीरक्तपित्तशोथमेदकफ  
दाई॥ २४॥ दधिउत्तमगोवलकरनरूचिप्रदाहीहोई॥ दोपनपाचनस्निग्धभनिहरैपवनकों  
सोई॥ २५॥ दहीअजाउत्तमकहतलघुग्राहीहैजान॥ कासस्वासअरूअर्शक्षयकार्षेदोषत्र  
यहान॥ २६॥ इतिवकरीदहीगुणःदोहा॥ दहीआविदुर्नामकफवातकोपवैजास॥ रसपाके  
अभियंदवैदोषउपावनतास॥ २७॥ इतिभेडदहीगुणःदोहा॥ माहिषदधिसुस्निग्धहैश्ले  
ष्मलगुरुहैएह॥ रक्तप्रदूषनवलकरनवातपित्तहरलेह॥ २८॥ इतिमहिषीदहीगुणःदो  
हा॥ नार्यादधितर्पणनयनतीनदोषकोंदेई॥ कहैजुमीठाबालपुनिपुष्टिकरनयहसेई॥



इति स्त्री दधिगुणः दोहा ॥ दही ऊटनी भेद कर अस विपाक क दुहोई ॥ हरे उदर अस मूल कमिक  
 ह अर्श को सोई ॥ ३० ॥ पेट वेध अस अनिल दुष वल वर्द्धन वै जास ॥ क द्यो प्रशस्त संव ग्रंथ में  
 करे दोष कानाश ॥ ३१ ॥ इति ऊटणी दधिगुणः ॥ दधि निषिद्ध दोहा ॥ ग्रीष्म शरदि व संत दधि  
 प्राये न दित योग ॥ हे मं त वर्षा शिशिर रुति कहै गुण वह लोग ॥ ३२ ॥ मूत्र कृच्छ्र अस काश प  
 नि अस चि होई प्रतिशपाय ॥ अति सार अस विषम ज्वर देह शीत मिटि जाई ॥ ३३ ॥ दही रात्रि  
 को पान न हि करै पान जो कोई ॥ भूष मंद अस कफ वठन मुख करना ही सोई ॥ ३४ ॥ इति द  
 धिगुणः ॥ अथ तक्रगुणः दोहा ॥ दीपन या ही लघु वल दुरुक्ष मधुर कायाय ॥ वीर्य उष्ण अस  
 पुष्टि करवा त नाश तक्र पाय ॥ ३५ ॥ शोथ छर्दि अस विषम ज्वर पांडु ति दे अति सार ॥ ग्रहण भर्ग  
 र मूत्र ग्रह अर्श पीड क मिहा ॥ ३६ ॥ मूल पीड क फ कृच्छ्र त ह उदर अस चिह्न जास ॥ वा



पततमुखलालवहंतक्रपानंतिनाश॥३७॥ इति नवनीतगुणः॥ अथ नवनीतगुणदोहा॥ गुरुया  
ही नवनीतभनिमथ्योत्तरतकोहोई॥ मीठाशीतलमेध्यलघुपित्त॥ बिलहरजोई॥ ३८॥ भूष  
करनअरुक्षयहरननेत्ररोगकोएह॥ अर्शयोगव्रणकासकोनाशकरनकोदेह॥ ३९॥ चि  
रोदूतमंथजुकहतकफभेदीगुरुहोई॥ वलकृतशिष्णुकोउचितहैहरेशोधकोजोई॥ ४०॥  
माषनक्षीरविलोइकरिकाठिसचिकनफेन॥ ग्राहीशीतलवलधरननेत्ररोगमुख  
देन॥ ४१॥ रक्तपित्तप्रशस्तभनिस्थूलकरनहैदेह॥ रसजाकोअतिमधुरहैकहैवैद्यगुन  
गोह॥ ४२॥ इति नवनीतगुणः दोहा॥ गुरुदीपनचक्षुष्यघृतखादुरसायनजान॥ शीतकी  
र्षज्वरदोषविषवातपित्तपवमान॥ ४३॥ तेजकोतिलावाण्यबुद्धिदृढकरिदेहीहोई॥ उ  
दावर्तउन्मादव्रणशोधनरोपणहोई॥ ४४॥ नवनीतकपर्यंतहविउपरिपरातनजान॥



वै०  
४४

मूर्छा विष अरुति मिरमद कुष्ठ मृगी काहान ॥ ४५ ॥ अधिक वर्ष जो होई घृत कहिन सके गुण के  
ई ॥ क ह्यो जु वैद्य विचारि कै स र्पि दी रस महोई ॥ ४६ ॥ इति घृत गुणः दोहा ॥ तेल उष्ण वल वरा  
कर देह स्थैर्य गुण गेह ॥ करै स्थूल अरु कृश हरन स्थूल नेत्र शिर मेह ॥ ४७ ॥ इति तैल गुणः  
मधुर उष्ण एरंड वर शोधन दीपन जान ॥ कटग्रह उदर अनाद ह ए वातरक्त कोषान ॥ ४८ ॥  
कांति बुद्धि वयस्यापि कर शोथ स्थूल हर गुल्म ॥ पुत्र विशोधन योनि दुख वातोदर को गु  
ल्म ॥ ४९ ॥ इति एरंड तैल गुणः ॥ नीव तैल ब्रण प्रलेप ज्वर कुष्ठ रोग कृमि ज्ञान ॥ कटु विपाक  
तीक्ष्ण उष्ण शोधन रोषातास ॥ ५० ॥ इति नीव तैल गुणः दोहा ॥ सार्षप केडू कुष्ठ हर कृमि  
उत्त उष्ण वसान ॥ शीस कर्ण विष दोष लघु रक्त पित्त की हान ॥ पर ॥ इति सार्षप तैल गुण दो  
हा ॥ माल के गुनी तैल सुभ प्रकृति पित्त की लान ॥ स्मृति बुद्धि गदगद वचन शीत हारिष

रामः  
४४



फहास ॥ ८२ ॥ इति हिंशुलगुणः दोहा ॥ रक्तरेणुकेडुडस्मज्जणशोधनरोपणजान ॥ विषकेडुविस  
८३ ॥ हरकरभग्नसंधान ॥ ८३ ॥ इति सिंदूरगुणः दोहा ॥ नीलापोषणलारकदुतुवंशविसदं  
लघुगुह ॥ लेखनमेदनशीतचक्षुकफजितकहियेगेह ॥ ८४ ॥ जणकेडुविषकेडुहरशोधन  
रोपणजान ॥ हरैजुकमिअरूपत्परीकेवदेवकहिमान ॥ ८५ ॥ इति तुत्यकगुणः दोहा ॥ मधुर  
स्निग्धसौवीरहिमवमिविषहिकास्वास ॥ कफपित्तक्षयअरुअस्रजितकह्योपंडितेरास ॥ ८६ ॥  
इति सुरमागुणः दोहा ॥ वीर्यउस्मकदुतिक्तमनिदेहरसायनहोई ॥ मुखअरुनेत्रविकारजि  
तकहैकफघ्नसवकोई ॥ ८७ ॥ इति उपधातरसोजनगुणः ॥ अथ अन्नगुणकथनदोहा ॥ स  
ठीलाघवशीतकरउदरवद्धकरजास ॥ वातपित्तकोशमनलघुयहगुणदेसुखदास ॥ ८८ ॥  
इति सेंधीचावलगुणः दोहा ॥ मुडरुद्धकफपित्तहरलघुहिमग्राहीजान ॥ अल्पनिलअरु



नयनवरागुणजानहमान ॥ ८८ ॥ इति मेरुगुणः दोहा ॥ मोठरूक्षकफपित्तहरवृमनजीतकुमि-  
 कारा ॥ ज्वरनाशनयहपण्यहैसदानिरोगीधार ॥ ८९ ॥ इति मोठगुणः दोहा ॥ चणकशीतलघुह-  
 दपुनिरक्तपित्तकफहारी ॥ वातलविष्टेभीवहुपुरुषवीर्यकौवारि ॥ ९० ॥ इति चणकगुणः दो-  
 हा ॥ शीतललघुयाहीमसुरिकफपित्तलोहजीत ॥ करैवर्णतच्छाकलघुयहगुणरायोचीत ॥  
 ९१ ॥ इति मसरीगुणः दोहा ॥ कुलत्पुडसलघुकुसनसरश्वासकफानिलहान ॥ शुक्रअ-  
 शमरीस्वेदपुनियाहीगुल्मवषान ॥ ९२ ॥ पीनसदृगचानाहहिक्कपित्तरक्तभनिछीन ॥ कु-  
 मिहरकहियैगुल्मविषमेत्ररोगकौहीन ॥ ९३ ॥ इति कुलत्पवनकुलत्पगुणः दोहा ॥ मुड-  
 लुप ॥ ९४ ॥ इति मोठरूक्षलघुमाषपुष्टगुरुहोई ॥ पापडगुणयहजानियैचतुरकहैसधकौई ॥ ९५ ॥  
 इति पापडगुणः दोहा ॥ प्रवलाजाअस्शालिध ॥ ९६ ॥ जमैगुणहैएह ॥ लाघवदीपनहिमकह



तवह रित्पाको देह ॥ ८६ ॥ मेहमेदकफ अस्र पित्त मल प्रद अल्पजुजान ॥ अतीसार चरु  
ह ॥ मेहरै रोग यहु मान ॥ ८७ ॥ इति लाजागुणः दोहा ॥ शालिलाज हिमकर मधुर लंघनी ही  
हरहृदोग ॥ अनिल उष्ण अरु श्रम बहुत हरत कहत सब लोग ॥ ८८ ॥ मूर्च्छा कैंस हरदाह  
ज्वर पित्त रक्त अरु वाय ॥ हरै घर्म व्यायाम श्रम जल से योग करिषाई ॥ ८९ ॥ इति सत्तुगुणः दो  
हा ॥ कलथ मंगगेहं मसरी होई लवाण के संग ॥ सब मिलि हरै जु वाय कों करै न कफ पित्त भं  
ग ॥ ९० ॥ धान्य संग पंचकोल कृत दोष शमन करि मंड ॥ देह दाह मुख शोष हर ज्वर कोंशी  
घ्रव हंड ॥ ९१ ॥ इति पंचकोल मंड संगुणः दोहा ॥ करहु यवा गुजल छगुण विरल द्रव से सि  
द्ध ॥ चार चतुर्गुण बीच डीघन सिक्कि क कहै वृद्ध ॥ ९२ ॥ कहौ पेय जल चवद गुण मंड  
चतुर्दश तोय ॥ करै कर्तता वैद्य यह गुरु लक्ष जानहि सोई ॥ ९३ ॥ हरै यवा गु अक्षि ज्वर



तस्माद्ग्राही जान॥ वसि विकारशोधन कहत यवगुन जानहुमान॥ ४॥ इति यवांगुगुणः दोहा  
 संग्राही लघु दीपनी वल कर हृदय सुधारि॥ नेत्र रोग तर्पण तृषा ज्वर पप्य ब्रण हि विदा  
 रि॥ ५॥ इति विलेपी गुणः दोहा॥ पेया ज्वर तृट् अक्षि गद अतीसार कहौ जान॥ जाहि पसीना  
 दोष मल लघु रुचि भूष वसान॥ ६॥ लघ्य न्न पेयादिक भाण्यते॥ इति पेयादि गुणः दोहा॥  
 मेडशीत दीपन लघव ग्राही सम कर धात॥ श्लेष्मा अरु प्रम पित्त ज्वर मार्दव कर्ण विषा  
 त॥ ७॥ इति मेडगुणः दोहा॥ त्वचामूल कफ लघु पुष्प दल पंच अंग यह होई॥ शारवा अकु  
 रसार पय अंग चीठ दश जोई॥ ८॥ इति दशंगः॥ अथ घृताधिकारः दोहा॥ इतममात्रा  
 न न कर्षती न मध्य जान॥ दोई कर्ष घृत लघु कहौ मात्रा यह परवान॥ ९॥ अथ घृत  
 घृत काल दोहा॥ न्याय हर मात्रा वृहत्तम मध्य स मायाम॥ जाघन्य कहौ हे दोष हर स चै एह



घृतधाम॥१०॥ लघुभाजासुखकारिणी दीपनस्थ शरीर॥ अल्पदोषकौश्लेष्टहैकहैजुषे  
हिलीर॥११॥ स्नेहनवेहणभ्रमहरनमध्यममात्राह॥ मृगीकुष्ठउन्मादग्रहविहरज्य  
स्थलेह॥१२॥ इतिमात्रादोहा॥ केवलकहिघृतपित्तकौलवणायुक्तकहिवाय॥ विद्वद्वारध  
कफयुक्तघृतकरहुआहउपाय॥१३॥ विषयीदित्तक्षतरूक्षनरवातपित्तभनिरोग॥ हीनव  
द्धिअरूस्मृतिघटघृतहेइनकौयोग॥१४॥ शीतकालमहिदिवसकहिउस्मकालभनि  
रात॥ वातपित्तउद्रेकनिशिवातश्लेष्मदिनयात॥१५॥ ऊस्मवारिघृतऊपरैषूषकायोग  
उदरशुद्धजलउस्मतेहरैविषमसवरोग॥१६॥







